ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय ®

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 2 दिसम्बर 2010 - जनवरी 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

शंख बजाने से क्या लाभ?	डा. महेश पारासर	4
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	5
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	5
मकर संक्रान्ति	डा. रचना भारद्वाज	6
वास्तु एवमं ज्योतिषीय उपायों द्वारा वैवाहिक सम्बन्धों को बेहतर बनाये	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	7
सन् 2011 के ग्रह गोचरानुसार द्वादश राशियों का वार्षिकफल	डा. कविता के अगरवाल	8
वास्तुशास्त्र के महत्वपूर्ण सूत्र	श्रीमती रेनू कपूर	9
चर्मरोग के लिये वरदान होम्योपैथी	डा. हेमेन्द्र विक्रम सिंह	9
जब करें महादशाऐं अत्याचार तब करें उनका उपचार	पं. अजय दत्ता	10
वास्तु सम्मत आफिस	पं. दयानन्द शास्त्री	11
क्या है आपके नाम का महत्व	देव स्वरुप शास्त्री	11
गोमूत्र से रोग–निवारण	डॉ. सतीश शर्मा	12
ज्योतिष विद्या एक विज्ञान	श्रीमती रेखा जैन	13
क्रोध हमें पतन की ओर धकेलता है	मोनिका गुप्ता	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
घर का भेदी	विजय शर्मा	16
पूजा की सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

शंख बजाने से क्या लाभ?

हिन्दूजन पूजा, आरती कथा वार्ता आदि धार्मिक अनुष्ठानों में शंख अवश्य फूंकते हैं इससे क्या लाभ?

(क) शंखेन हत्वा रक्षांसि (अथर्व. 4–10–21)

(ख) अवरस्पराय शख्डध्वम् (यजु. 30–161)

(ग) यस्तु शख्डध्वनि कुर्यात्पूजाकाले विशेषतः।
विमुक्तः सर्वपापेन विष्णुना सह मोदते।।
(रणवीर भक्ति–रत्नाकार स्कान्दे)

अर्थात्– (क) शंख से सब राक्षस मारकर, (ख) शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिए शंख फुंकने वाला व्यक्ति अपेक्षित है। (ग) पूजा के समय विशेषतः जो पुरुष शंख ध्वनि करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं, और विष्णु भगवान् के साथ आनन्द करता है। श्री जगदीशचन्द्र बसु जैसे भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने यन्त्रों द्वारा यह प्रत्यक्ष दिखा दिया है कि एकबार शंख फंकूने पर जहाँ तक उसकी ध्वनि जाती है वहाँ तक अनेक बीमारियों के कीटाणुओं के हृदय दहल जाते हैं, और वे मूच्छित हो जाते हैं। यदि निरन्तर यह क्रिया चालू रक्खी जाए तो फिर वहां का वायुमण्डल कीटाणुओं से सर्वथा उन्मुक्त हो जाता है।

यह सभी विज्ञानवेत्ता मानते हैं कि शब्द की प्रगति में सूर्य किरणें बाधक सिद्ध होती हैं। इसलिए हमारे यहाँ प्रातः सायं ही प्रायः शंख फूंका जाता है, जिससे कि शंख घोष से पूरा लाभ उठाया जा सके। मूकता ओर हकलापन दूर करने के लिए निरन्तर शंख का शब्द श्रवण करना एक अचूक महौषधि निरंतर शंख फूंकने वाले व्यक्ति को कभी फुफ्फुस (फेफड़ों) का रोग नहीं हो सकता। दमा, ऊरुक्षत, कास, छर्दी, प्लीहा, यकृत् और इन्फ्लूंजा जैसे रोगों के पूर्वरुप में शंख ध्वनि लाभप्रद है। इसलिये देवमन्दिर, कथाभवन आदि स्थानों में जहाँ मनुष्यों का अधिक जमाव होता हो, और उनके मुख से निकलने वाले श्वास से वायुमण्डल दूषित होने का पर्याप्त अवसर हो ऐसे स्थानों में शंख बजाकर प्रथम ही वायुमण्डल को विशुद्ध बनाना बहुत लाभप्रद है।

शंख्ड का जल क्यों छिड़का जाए?

अभी नीराजन आरती के प्रसंग में शंख में जल भरकर दर्शकों पर छिड़कने का उल्लेख किया गया है यह क्यों?

ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि–

जलेनापूर्य शंखे च तत्र संस्थापयेद् बुधः। पूजोपकरणं तेन, जलेन क्षालयेत्पुनः।। **(ब्र. वै. ब्रह्मखण्ड 26–67)**

अर्थात्– शंख में जल भरकर देवस्थान में रखे, पुनः उससे समस्त पूजा सामग्री का प्रक्षालन करे।

'वस्तु वैचियवाद' के अनुसार शंखस्थ जल और वह भी विष्णु भगवान् की प्रतिमा के सामने उपहृत परम पवित्र माना गया है। अथर्ववेद के शंख को मणि नाम से स्मरण किया है और इसकी महिमा के वर्णन में पूरा एक सूक्त भरा है। पात्र के संयोग से अमुक वस्तु भी उसक गुणों से प्रभावित हो जाती है, यह प्रत्यक्ष देखा जाता है, जैसे पीतल के वर्तन में मट्ठा विकृत हो जाता है, कांसे प्रोर ताम्बे बर्तन में भी घृत आदि द्रव्य बिगड़ जाते हैं, इसी प्रकार अमुक पात्र में तत्तद् वस्तुवें तद्गुण–सम्पन्न हो जानी स्वाभाविक है। सो शंखस्थ पावक गुणों से अन्यान्य वस्तुओं और दर्शकों को भी लाभान्वित केसे किया जाए–इसका सहज उपाय यही हो सकता है कि तत्संयुक्त जल में शंख के गुणों का आधान करके फिर उसे सर्वत्र वितरण किया जाए। इस क्रिया में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि जल में डाले हुए द्रव्यों की विशेषता सौ गुणी हो जाती हैं, यह हम 'वस्तु **वैचियवाद**' प्रघट्ट में सिद्ध कर आये हैं। सो शंखस्थ जल के सेवन से संस्पृष्ट समस्त वस्तुजात विशुद्ध हो जाती है। सगर्भा स्त्री यदि शंखस्थ जल द्वारा स्नान शालिग्राम शिला का चरणामृत पान करे तो अन्यान्य लाभों के साथ उससे प्रसूत बालक कभी मूक नहीं हो सकता। रुक–रुककर बोलने वाले हकले व्यक्ति पर तो मैनें शंखजल पान का स्वयं प्रयोग करके देखा है। पाठक स्वयं भी अनुभव कर सकते हैं। धैर्य और नैरन्तर्य की आवश्यकता है, लाभ अवश्य होगा।

महेश पारासर

अमृत वचन

मनुष्य को इसकी अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि समाज क्या कहेगा? उसे अपने आत्मविश्वास की ही अधिक चिन्ता करनी चाहिए जिससे उसका निरन्तर विकास होता रहे।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

पाठकों के पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार,

आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय को पढ़कर मैं बहुत लाभन्वित हुआ हूँ। कुछ लेख तो इतने रोचक होते है कि उन्हें बार–बार पढ़ता हूँ लेकिन मन भरता ही नहीं है। कुछ दिन यदि इसी प्रकार से शुद्धमनोभावों के साथ आपकी टीम अपना कार्य करती रही तो यकीन माने कि वह दिन दूर नहीं जब आपकी पत्रिका राष्ट्रीय स्तर पर अपना एक अलग ही मुकाम लिए नम्बर 1 पर होगी। आपको तथा आपकी टीम को ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ।

श्री नीरज गोस्वामी– ऐटा

आदरणीय डॉ. पारासर जी,

एक बार अपने रिश्तेदार के घर आपकी पत्रिका को मात्र देखने का मौका मिला। पढ़ने की इच्छा इतनी बढ़ गई कि दूसरे दिन ही आपके कार्यालय में आकर इसकी सदस्यता ग्रहण करनी पड़ी। पिछले एक वर्ष के दौरान आपकी पत्रिका के माध्यम से ही इतना ज्ञान अर्जन किया कि आज ज्योतिष के प्रति दिल में अगाध श्रद्धा है। जिसका सारा श्रेय आपको जाता है।

धन्यवाद।

श्री राकेश मिश्रा– आगरा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी कुण्डली में कर्ज–मुक्ति तथा आर्थिक सम्पन्नता का योग है या नही। यदि हाँ तो कब तक?

उत्तर– वर्तमान में आपकी गुरु की महादशा चल रही है। समय गोचरानुसार भी अनुकूल नही है। गुरु की पूजा व दान करें। पक्षियों को दाना चुगाये ऋणमुक्ति यंत्र व मंत्र की उपासना लाभ देगी।

जय प्रकाश जैन ट्रान्सपोर्ट कम्पनी।

प्रश्न– व्यापार में जितना धन डालता हूँ। उसकी बढोत्तरी नहीं होती है। कर्ज की स्थिति ही बनी रहती है।

उत्तर– आपकी समस्या के समाधान के लिए ये उपाय करें– **सुरेश कंसल, बरेली**

1. रोजाना सूर्य भगवान् को ताबें के बर्तन से अर्घ्य दें।
2. ऋणमुक्ति यंत्रा अपने पास रखें एवं त्रिकोण मंगल यंत्र की रोजाना पूजा करें।
3. पन्ना रत्न कनिष्ठा उगली में बुधवार को धारण करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– मैं वर्ष 2006 से एक फलैट में किराये पर रह रहा हूँ। जबसे इस फलैट में आया हूँ मेरी आमदनी बिल्कुल खत्म हो गई । जो भी काम करता हूँ उसी में घाटा उठाना पड़ता है। कई लोगों से सम्पर्क किया पर कोई भी समस्याओं का समाधान न हो सका। अपने फलैट का नक्शा। कारण व उपाय बतायें

रिक्कू भोजवानी – फरीदाबाद

समाधन– आप जिस फलैट में रह रहे हैं उसका दरवाजा दक्षिण दिशा में है और आपकी कुण्डली में दिशा व्यय भाव में है। मुख्यत: यही एक मात्रा कारण है कि आपके खर्च इस फलैट में आने के बाद बढ गये हैं। दूसरी बात आपके फलैट में दो शौचालय हैं। एक उत्तर पूर्व दिशा में और दूसरा दक्षिण पश्चिम दिशा में, तो आप उत्तर पूर्व दिशा वाले शौचालय का उपयोग कम करें, उसको हमेशा साफ रखें और उसमें एक बाऊल में नमक भरकर रखें जिसे प्रत्येक सप्ताह बदलते रहे।

समस्या–अपने नवनिर्मित भवन का नक्शा भेज रहा हूँ। आवश्यक जानकारी सहित उचित सुधार के उपाय बतायें। आपकी अति कृपा होगी।

आर. के. मिश्रा– आगरा

समाधन– आप अपने नवनिर्मित भवन में समर्सिबल को भवन के बीचों बीच न लगवाकर उसे उत्तर दिशा की ओर लगवायें। घर में दरवाजे कुछ ज्यादा ही लगवाये गये हैं उनके स्थान पर बीच के दरवाजे को छोड़कर साईड के दरवाजों में खिडकिया लगवायें। सीढ़ियों के नीचे जो शोचालय बनाया है उसे बन्द करवायें। शेष उत्तम है।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

मकर संक्रान्ति

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

मकर संक्रान्ति, जो कि हर वर्ष प्रायः 14 जनवरी को पड़ा करती है भारत के वैदिक कालीन पर्वो में से एक है। यह भारत सम्पूर्ण प्रान्तों में विविध नामों ओर रुपों में अति प्राचीन काल से मनाई जाती है। मकर संक्रान्ति वास्तव में एक ऋतुपर्व है और इसका महत्व इस बात में है कि इस दिन से भगवान् सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। और देवताओं का ब्रह्ममुहूर्त प्रारम्भ हो जाता है अतएव उत्तरायण काल को शास्त्रकारों ने साधनाओं एवं परा अपरा विद्याओं की प्रगति की दृष्टि से सिद्धिकाल माना है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी गृह निर्माण देवप्रतिष्ठा सकाम यज्ञ यज्ञादि अनुष्ठानों के लिए उत्तरायण काल को ही प्रशस्त कहा गया है। जीवन तो जीवन, मृत्यु तक के लिए भी उत्तरायण काल की विशेषता शास्त्रों में वणित की गई है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

अग्नि र्ज्योतिरहः शुक्लम् षष्मासा उत्तरायण्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।

अर्थात्–जो ब्रह्मवेत्ता योग लोग उत्तरायण सूर्य के 6 मास, दिन के प्रकाश, शुक्लपक्ष आदि में प्राण छोड़ते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

महाभारत का वह आख्यान प्रसिद्ध है कि जब भीष्म पितामह युद्ध में सर्वथा क्षितविक्षत होकर गिर पड़े और उनका अन्तिम काल समीप आ गया तो उन्होंने अपने समक्ष उपस्थित कौरव पाण्डवों से उस दिन की तिथि नक्षत्र के बारे में पूछा। सहदेव– जो ज्योतिष विद्या में निपुण थे–ये यह जान कर कि अभी दक्षिणायन चल रहा है भीष्म जी ने अपने मरने का प्रोग्राम उत्तरायण आने तक के लिए स्थगित कर दिया। वे वहीं शैय्या पर लेटे–लेटे दो–तीन मास तक उत्तरायण की प्रतीक्षा करते रहे और मकर सम्पात हो जाने के बाद उत्तरायण में माघ शुक्ल अष्टमी को स्वेच्छा से प्राणों को परित्याग किया। महाभारत का यह आख्यान बतलाता है कि उस समय भी लोग बड़ी अधीरता से मकर संक्रान्ति की प्रतीक्षा करते ओर इस पर्व को बड़े उत्साह पूर्वक मनाते थे।

सूर्य उत्तरायण में पदापर्ण जन–जन को, प्राणहारी शीत की समाप्ति एवं प्रतयासन्न वसन्त के शुभागमन का सन्देश देकर प्रफुल्लित कर देता है। दिन बड़े होने लगते हैं और सूर्य का प्रकाश एवं प्राणदायिनी ऊष्मा निरन्तर वृद्धि की और अग्रसर होकर प्राणि जगत् को आनन्दोन्मुख बना देती है। इस अवसर पर देश के सभी पवित्र तीर्थो, संगम स्थलों एवं गंगा यमुनादि पावन सरिताओं के तट पर स्नान दानादि द्वारा पुण्यार्जन करने के लिए लाखों श्रद्धालु आस्तिक जन एकत्रित होते हैं। गंगा सागर पर तो इस संक्रान्ति पर इतना जनसमूह एकत्र होत है कि उसका क्या वर्णन किया जाए। वर्ष में केवल एक बार इसी संक्रान्ति पर वहाँ वरुण देव की कृपा से एक विशेष टापू का उद्भव होता है जहॉ इस महान् पर्व को मनाते हैं। यह टापू केवल 1 सप्ताह रहता है। वेदादि शास्त्रों में मकर संक्रान्ति को प्रातःकाल किसी सर सरिता, या संभव न होने पर किसी कूपोदक में ही स्नान करने का बड़ा माहत्म्य बतलाया गया है। स्नान के बाद अपनी सामर्थ्यनुसार चावल, खिचड़ी, गुड़, तिल, फल मेवा आदि इस ऋतु के हितकारी खाद्य–पदार्थ एवं ऊनी–सूती वस्त्र आदि वस्तुएँ अपने कुल–वृद्धों, गुरुओं, परोहितों को देनी चाहिए। यह संक्रान्ति प्रायः माघ मास में आती है। माघ शब्द संस्कृत के मघ शब्द से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है धन=सोना चांदी, वस्त्राभूषण एवं विविध प्रकार अन्नादि पदार्थ। इन वस्तुओं को विशेषतया उपहार दान आदि देने का मास होने के कारण ही यह मास माघ कहलाता है और इसे माघी संक्रान्ति भी कहते हैं। इस अवसर पर प्रायः सर्वत्र खिचड़ी, पापड़, तिलकुट आदि का भोजन करने की प्रथा प्रचलित है। इसका भाव यह है कि मकर सम्पात के इस मास में हमें खिचड़ी–जिसमें विपुल मात्रा में घृत आदि खपाया जा सकता है–जेसे सुपाच्य और पौष्टिक पदार्थो का खूब प्रयोग करना चाहिए।

पंजाब में यह पर्व संक्रान्ति से एक दिन पूर्व **'लोहड़ी'** के नाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर प्राचीनकाल में जो विशिष्ट यज्ञों का आयोजन होता था उसकी झलक घर–घर में लकड़ियाँ जलाकर मकई की खील और तिल की रेवड़ियों को अग्नि को अर्पण करके प्रसाद रुप में वितरण करने मे आज भी मिलती हैं। वेद मन्त्रों का स्थान आज लोकगीतों ने ले लिया हैं पारिवारिक जन एक स्थान पर एकत्र होकर बड़े उत्साह से इस पर्व को मनाते हैं।

तामिलनाडु आन्ध्र आदि दक्षिण के प्रदेशों में मकर पर्व **'पोंगल'** के नाम से प्रचलित है। पोंगल दक्षिण का महान् पर्व है और दशहरा दीपावली की भाँति इसको वहाँ की जनता बड़े समारोहपूर्वक मनाती है।

इस अवसर पर मन्दिरा में भगवत्प्रतिमाओं का विशेष श्रृंगार होता है। सामूहिक नृत्य संगीत आदि के आयोजन होते हैं। गाजेबाजों के साथ बड़े–बड़े जलूस तथा भगवान् की शोभायात्रा निकाली जाती है। भगवान् को विशेष प्रकार से बनाई गई खिचड़ी जिसे 'पोंगल' कहा जाता है, भोग लगता है और प्रसाद रुप में उसे बाँटा जाता है।

प्राचीन काल में मकर संक्रान्ति में ऋषि आश्रमों, गुरुकुल, ऋषिकुलों में वेदाध्ययन का तीसरा सत्र शुरु होता था। इस समय गृहस्थजन अपने बालकों को आश्रमों में प्रविष्ट कराते थे। 'वसन्ते ब्राह्मणमुपनयेत्' के अनुसार कुछ दिन उपरान्त ही आचार्य द्वारा उनके उपनयन संस्कार कराके वेदाध्ययन शुरु करवाया जाता था। मकर संक्रान्ति से कुछ दिन बाद पड़ने वाला **'बसन्त पंचमी'** पर्व जिस पर आज भी सर्वत्र सरस्वती पूजा की जाती है, इसी बात का सूचक है कि नया सत्र शुरु होने पर उस समय विद्यालयों में विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती का विशेष पूजानादि सम्पन्न होता था। दक्षिण में **'पोंगल पर्व'** को आज भी बालकों को अक्षरारम्भ, वेदारम्भ करवाने का आम रिवाज **है** जो हमारी इस धारणा की पुष्टि करता है।

मकर पर्व का आज भी विशेष महत्व है, इस समय खेतों में गेहूँ की फसल लहलहा अडती है। फूली हुई सरसों की पीली साड़ी पहन कर प्रकृति नए रुप मं जन–जन के मन को अपनी और आकर्षित करती है। मटर, चने की फलियाँ, दानों के भार से झूमझूम लहराती हैं। गन्ने रसपूर्ण हो पथिकों को मन और मुँह मे मिठास भरने को निमन्त्रण देते मालूम होते हैं और गुड़ की सोधीं महक मीलों तक मनुष्यों के हृदय में गुदगुदी–सी मचाती है ऐसे में कृषि प्रधान भारत का एक बड़ा समुदाय मकर–संक्रान्ति के पर्व के रुप में अपने आनन्द और उल्लास को प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता है कि यह फसल सकुशल घर में आ जाए और भारत भूमि सदा यो ही फूलती फलती रहे। ❋❋❋

वास्तु एवमं ज्योतिषीय उपायों द्वारा वैवाहिक सम्बन्धों को बेहतर बनाये

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

विगत कई वर्षो के दौरान महिलायें जिन समस्याओं को लेकर मेरे पास आयी उनको यदि हम आंकड़ों के आधार पर देखते हो 50 प्रतिशत 60 प्रतिशत महिलायें पारिवारिक समस्याओं जैसे साँस–बहु के मध्य तनाव पति–पत्नी के मध्य तनाव बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी समस्यायें जैसी अनेक समस्याओं को लेकर मेरे पास आती रहती हैं। 25 प्रतिशत महिलायें स्वास्थ्य तथा 25 प्रतिशत 30 प्रतिशत महिलायें कामकाजी होने के कारण उत्पन्न समस्याओं के कारण मेरे पास आती हैं। इस लेख में मैं उन महिलाओं की समस्याओं को उठा रही हूँ जिनके किसी कारणवश पतियों से सम्बन्धों में तनाव एवमं ठंडापन व्याप्त हो गया है।

हर विवाहिता स्त्री एक सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करती है। हर स्त्री का एक सपना होता है कि उसका पति उसका अधिक से अधिक ध्यान रखे उसे अपना समय दे तथा उसकी इच्छओं को पूरा करे। परन्तु भौतिक की एक दौड़ में पुरुषों की कार्य व्यस्ता इतनी बढ़ गयी है कि स्त्री–पुरुष सम्बन्ध इससे प्रभावित हो रहे हैं। अनेक बार यह भी पाया गया है कि विवाह के प्रारम्भिक कार्यो में सम्बन्ध मधुर रहते हैं परन्तु धीरे–धीरे सम्बन्धों में तनाव बढ़ता जाता है।

आज में आपको एक ऐसी ही महिला का अनुभव बताना चाहूँगी तथा उनके लिये मैंने जो वास्तु एवमं ज्योतिषय उपाय किये उन उपायों का वर्णन यहाँ करुँगी ताकि आप भी इन अनुभवों का लाभ उठा सके।

कुछ समय पूर्व एक महिला मेरे पास आयी। वो बहुत बैचेन व परेशान लग रही थी। उनके विवाह को 14 वर्ष हो चुके थे 36–37 वर्ष की वह महिला का दाम्पत्य जीवन बहुत ही तनावपूर्ण हो चुका था। पति महाशय ने अपनी पत्नी की ओर ध्यान देना बिल्कुल बन्द कर दिया था जिसके कारण वह नीरसता तथा एकाकीपन के दौर से गुजर रही थी।

जब निरीक्षक के लिये मैं उनके घर गयी तो मैंने पाया कि उनके यहाँ अनेक प्रकार के वास्तुदोष व्याप्त थे साथ ही मैं उनकी जन्मकुंडली में सप्तम् भाव भी पीड़ित हो रहा था। मैंने उन्हें कुछ उपाय बताये जिनका उन्होंने बड़ी निष्ठापूर्वक पालन किया।

सर्वप्रथम मैंने उनके कमरे का रंग बदला क्योंकि उनके कमरे का रंग गहरा पीला था यह बृहस्पति ग्रह का रंग था जब कि वैवाहिक जीवन का कार्य क्षेत्र शुक्र ग्रह का है। उनके कमरे का रंग हल्का गुलाबी कराया यह रंग प्रणय का है। छत पर श्वेत रंग तथा कमरे के फर्नीचर में से स्लेटी रंग की माइका हटा कर सफेदा माइका बदलवायी। पूरे कमरे की साजसज्जा में गुलाबी तथा सफेद रंग का समायोजन कराया गया।

मैंने उन्हें बताया कि आप अपने कमरे में हल्के गुलाबी, आसमानी श्वेत रंग की चादरों का प्रयोग करे। इन्ही रंगों के थोड़े गहरे शेड्स का प्रयोग पर्दो के रुप में करें। इसके बाद उनके पलंग की स्थिति में सुधार किया उसका पलंग कमरे के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित था यह ठंडा स्थान है जो कि वैवाहिक जीवन में ठंडापन ला देता है। कमरे में पलंग दक्षिणी–पश्चिमी हिस्से में रखवाया तथा सिंरहाना दक्षिण की ओर किया जिससे उस दम्पत्ति को स्वास्थ्य सम्न्धी समस्याओं का सामना न करना पड़े।

कमरे में जगह–जगह भगवानों के कलैण्डर व तस्वीरे हटायी तथा एकल चित्र तथा फालतू समान हटाकर मैने उस दम्पत्ति को युगल प्रसन्नतापूर्वक मुद्रा में लिया गया चित्र कमरे की दक्षिणी दीबार पर टाँग दिया तथा साथ ही उनके विवाह के कुछ महत्वपूर्ण क्षणों तथा वैवाहिक जीवन के भरपूर पलों के चित्रों को छाँट कर पश्चिमी दिवार पर फ्रेम करा कर लगा दिया।

उनके पंलग पर एक क्रिस्टल ट्री तथा मैरिडियन बतखों का जोड़ा रखा ताकि उनके वैवाहिक जीवन में समरता बनी रहे। कमरे के उत्तरी पश्चिमी हिस्से में एक रुपहरी छड़ो वाली विन्डचाइन टाँग दी ताकि उनकी समधुर लहरी कमरे में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करती रहे। इसके पश्चात कमरे में से टी.वी हटवाया क्योंकि यह पति–पत्नी के मध्य एक दीवार का कार्य करता है। शयनकक्ष पूरे दिन के बाद नितान्त एकाकी क्षणों को बिताने का स्थान है तथा टी.वी व शीशे वहाँ की एकान्तता को समाप्त करते है अतः शीशे ढकवा दिये तथा मैने अपनी क्लाइन्ट को इस बात का ध्यान रखने को कहा कि वह अपने कमरे को सार्वजनिक ना बनाये तथा किसी अपना महिला सदस्य को अपने पलंग पर न बैठने दें।

कमरे में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने के लिये पलंग में पूर्ण रुप से चार्ज करते हुए अष्टधातु के पिरामिड लगाये तथा उनसे कमरे से वेतरकीब पड़े समान को ठीक तरह से रखने को कहा।

हल्के संगीत का कमरे में प्रबंध कराया तथा लाइट अरेन्जमेट की व्यवस्था ठीक करो। दक्षिणी–पूर्वी कोण पर एक सुन्दर लैम्प शेड़ रखवाया।

अंत उनसे कमरे में इत्र या प्रफ्यूम का प्रयोग करने को कहा क्योंकि खुश्बू से मन मस्तिष्क में ताजगी मिलती है तथा कार्य क्षमता पर भी शुभ प्रभाव पड़ता है।

फिर उनकी जन्मकुंडली का अध्ययन कर मैंने उन्हें हीरा पहनने की सलाह दी तथा जरकन के जेवरों को प्राथमिकता पर बल दिया साथ ही उनके परिधायों के रंगों में भी परिवर्तन लाने की सलाह ही उनसे नीले काले शेड़ का प्रयोग न करने की सलाह दी तथा हल्के गुलाबी एवं सफेद की प्राथमिकता पर जोर दिया। इसके पास ही ज्योतिषय उपायों के तहत शनि के दान, चिडियों को बाजरा चुगावे जैसे उपायों तथा कुछ विशेष मन्त्रों के जाप की सलाह दी।

लगभग दो महीने में ही उनकी चरमरायी वैवाहिक जीवन की स्थिति सम्भलने लगी। 3 मास पश्चात वह मुझे धन्यवाद देने आयी उनका प्रसन्नता से खिला चेहरा देख मुझे बड़ी तसल्ली हुई। अपने व्यवसाय की गरिमा को बनाये रखने के लिये उन महिला का नाम मैंने गुप्त रखा है परन्तु उनके जीवन में प्रसन्नता लाने वाले सारे उपाय आपको मैंने इस लेख में लायी हूँ जिससे आप भी उनसे लाभवित हो सके। ❋❋❋

सन् 2011 के ग्रह गोचरानुसार द्वादश राशियों का वार्षिकफल

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

मेष राशि- जनवरी– वर्ष का आरम्भ इच्छित फल देने वाला होगा परंतु मन किन्ही कारणों से अशांत रहेगा, व्यर्थ की भाग दौड़ रहेगी मासान्त स्थितियाँ आपके अनुकूल रहेगी। किसी के बहकावे न आऐ। लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक होंगे। **फरवरी**– भाग्य एवं कर्म का शुभ फल प्राप्त होगा। व्यापार में वृद्धि एवं पद उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे उच्च पदाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। पिता एवं पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ने की सम्भावना है। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। **मार्च**– पूर्व निर्धारित सभी कार्य पूर्ण होते हुऐ नजर आऐंगे। संतान से शुभ समाचार प्राप्त होगा घर–परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। ज्यादा भाग–दौड़ से स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। स्त्री वर्ग से लाभ प्राप्त होगा। **अप्रेल**–अनावश्यक कार्यो के लिये व्यर्थ की भाग दौड़ रहेगी स्वास्थ्य में गिरावट आऐगी। लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक होगें। मित्रों व आगुन्तकों से कष्ट मिलेगा। दान–पुण्य करने से मन प्रसन्न रहेगा। **मई**– इच्छित फल की प्राप्ति होगी धन, मान–सम्मान पद उन्नति के अवसर प्राप्त होगें। पत्नी, बच्चों के साथ समय बिताऐगे। परिवार में किसी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। आपके शत्रु आपको हतोत्साहित करने का प्रयत्न करेगें सावधान रहें। **जून**– धन, मान–सम्मान की वृद्धि होगी परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। भाग्योन्नित में आ रही बाधाऐं दूर होगी। किन्तु अनचाही मुसीबत आ सकती है। कार्य से काम ले वाणी पर संचय बरते। अचानक आऐ परिवर्तन से आपके जीवन में बदलाव आऐगा। **जुलाई**– साहस व पराक्रम की वृद्धि होगी। कार्य के वाद–विवाद से दूर रहें। धन के लेने–देन व खरीद फरोक्त में सावधानी बरतें। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढेगा। माता–पिता व भाई बहिनों का सहयोग प्राप्त होगा। यात्रा में सावधानी बरतें। **अगस्त**– मास प्रारम्भ में कुद तनाब रहेगें। विधार्थी वर्ग को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परंतु बाद में परिस्थितियाँ अनुकूल होगी धैर्य रखें। नौकरी–पेशा व्यक्तियों के लिये समय अनुकूल है। दामपत्य जीवन में तकरार की स्थिति पैदा हो सकती है। समझदारी से काम लें। **नवम्बर**– सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यापार साझेदारी से लाभ प्राप्त होगा। भाग्य कर्म से पेटग्रस्त का प्रतिफल प्राप्त होगा। विधार्थीयों के लिये समय अनुकूल है। दान पुण्य कर्म से मानसिक शान्ति मिलेगी। पदाधिकारियों से अनबन होने की सम्भावना है। संयम से काम लें। **दिसम्बर**– स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें लापरवाही न बरतें। विधार्थी वर्ग में अनुकूल परिणाम न प्राप्त होने की वजह से निराशा की स्थिति पैदा होगी। माता–पिता से सम्बन्ध अनुकूल होगें। सामाजिक मान सम्मान की प्राप्ति होगी। बुद्धि विवेक से परिस्थितियों का सामना करने से सभी कार्य सिद्ध होगें।

वृष राशि- जनवरी– सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। कठोर वाणी का प्रयोग न करें। आपकी सुझबूझ आपके निर्णय के लिये लाभकारी सिद्ध होगी। दूसरों के बहकावें न आऐ। जोखिमपूर्ण कार्य व व्यर्थ की भाग–दौड से बचें स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। **फरवरी**– नवीन योजनाए क्रियान्वित होगी। व्यापार में वृद्धि व शुभकारी यात्राऐं होगी। धन का दुरुपयोग करने से बचें। विधार्थी वर्ग को आलस्य त्यागकर अपनी योजनाओं पर कार्य करना चाहिये। सरकारी कामकाज में सफलता मिलेगी। उतावलेपन मे कोई कार्य न करें वरना पछताना पड़ सकता है। **मार्च**– व्यापारिक यात्राऐं भाग्योदयकारी रहेंगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। किसी बड़े की सलाह आपके प्रयासों में आपको सफलता मिलेगी। कुटुम्बीजनों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। वे वजह विवाद से बचें। बेकार के प्रलोभनों में न फँसे। जीवनसाथी से सभी मनमुटाव दूर होगें और प्रसन्नता का अनुभव करेगें। **अप्रेल**– माता के स्वास्थ्य में कमी आऐगी। नीचस्थ अधिकारियों से मनमुटाव की सम्भावना है। खर्चे की अधिकता से तनावूपर्ण माहौल रहेगा। उच्चधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। मनोरंजन हास परिहास में समय व्यतीत करेगें। पत्नी–बच्चों का सहयोग प्राप्त होगा। **मई**– दूर–दराज की यात्राऐं कष्टप्रद रहेगी। इसके वावजुद आपकी मेहनत का प्रतिफल आपको प्राप्त होगा। व्यावसायिक गतिविधियाँ सामान्य रूप से चलती रहेगी। किसी भी प्रकार की हानि को दिल पर न लें अन्यथा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। उच्च शिक्षा के प्रयास सफल होगें। **जून**– स्वभाव में चिडचिड़ाहट व शारीरिक शिथिलता का अनुभव होगा। दामपत्य जीवन में कटुता बढ़ेगी। कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होगी। रुका हुआ धन मिलेगा। प्रमोशन व वेतनवृद्धि की सम्भावना है। समाजिक मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जमीन–जायदाद से लाभ मिलेगा। **जुलाई**– परिवार की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिये प्रयास करेगें। आगुन्तको व मित्रों से कष्ट होगा। मास प्रारम्भ में हितों की रक्षा के लिये संघर्ष करना पड़ेगा परंतु बाद में सुखद परिणाम मिलेगें। व्यर्थ के बाद विवादों से बचें व आलस्य का त्याग करें। **अगस्त**– साहस पराक्रम की वृद्धि होगी। सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी। मित्रों व आगुन्तकों के साथ हँसी खुशी का वातावरण रहेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। भवन–वाहन का सुख प्राप्त होगा। शेयर सट्टे में पूँजी निवेश करने से पहले सोच विचार लें। **सितम्बर**– स्वास्थ्य सम्बन्धी चिताऐं लगी रहेगी पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति के लिये व्यर्थ की भाग दौड़ लगी रहेगी। खर्चे की अधिकता से तनाव की स्थिति पैदा होगी। गृह क्लेश का वातावरण उपस्थित होगा। आपको सोच समझकर सयंम से कार्य करना होगा तथा विवादों को दूर करने का प्रयास करें। **अक्टूबर**– नौकरी एवं प्रतियोगिताओं में सफलता मिलेगी सुख सुविधाओं पर खर्चे होगें। तकनीकी शिक्षा लाभकारी सिद्ध होगी, अन्वेषक कार्यों में सफलता मिलेगी। साझेदारी में सावधानी वरतें धोखाधड़ी होने की सम्भावना है। प्रेम प्रसगों के लिये समय उचित नहीं है। **नवम्बर**– दामपत्य सुख में कमी आऐगी जीवन साथी से टकराव की स्थिति पैदा होगी। व्यापार में शिथिलता आऐगीं शारीरिक व मानसिक अस्वस्थता का आपकी दिनचर्या पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। धर्म–कर्म के कार्य करने से मानसिक संतोष प्राप्त होगा। **दिसम्बर**– साझेदारों से धन सम्बन्धी लेने–देन में सावधानी बरतें। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य

शेष पेज 15 **पर**.....

वास्तुशास्त्र के महत्वपूर्ण सूत्र

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

वास्तुशास्त्रानुसार योजनावद्ध बनाया गया भवन सब प्रकार के सुख, धन संपदा बुद्धि, समृद्धि और प्रसन्नता देने वाला होता है। वास्तुशास्त्र के नियमों की अवहेलना के परिणाम स्वरुप बनाये गये भवन अपयश, दुख और अपवाद की स्थिति उत्पन्न करते हैं। व्यक्ति के कल्याण एवं उन्नति के लिये वास्तु शास्त्र के नियमों का पूर्ण रुपेण पालन करना चाहिये। वास्तु का महत्व व्यक्ति के जीवन में वास्तु के नियमों की उपयोगिता के कारण है वास्तु शास्त्र की महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पंच महाभतों से निर्मित व्यक्ति को जीवन में इन महाभूतों से निर्मित वातावरण के साथ सामाजस्य स्थापित करने की प्राथमिकता देता है और व्यक्ति की मानसिक व शारीरिक क्षमताओं को उन्नत करता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण वास्तु सूत्र जो व्यक्ति को सभी प्रकार के सुख समृद्धि और शान्तिपूर्ण जीवन को प्राप्त कराते हैं।

1. हम जिस भूखंड पर भवन बनाना चाहते हैं उसका आकार चौरस है अथवा लंब चौरस अर्थात भवन का आकार आयता कार है अथवा वर्गाकार है भूखंड के आकार की यह स्थिति भवन बनवाने के लिये सर्वोत्तम कही गई है।

2. भवन के समीप सड़के किस दिशा में है यह भी अवश्य देखें पूर्व दिशा व उत्तर दिशा मे सड़क का होना शुभ फलदायी होता है।

3. वास्तुशास्त्र में पूर्व उत्तर दिशा को मुख्य रुप से महत्व दिया गया है पूर्व उत्तर के मध्य जो कोण है उस कोण को ईशान नाम देकर उसको महत्ता प्रदान की गई। उत्तर पूर्व दिशा या ईशान्य में प्रवेशद्वार अथवा खिड़कियाँ होना वास्तु सम्मत है और दक्षिण व पश्चिम दिशा में खिड़कियाँ कम होनी चाहिये।

4. उत्तर पूर्वी कोण घर का मुखडा है जिसे सदैव स्वच्छ व शुद्ध रखना चाहिये इस स्थान पर मन्दिर स्थापित करना भवन में सुखद वातावरण की स्थिति को दर्शाता है।

5. हिन्दू धर्म में दहलीज को बड़ा महत्व प्राप्त है अनेक धार्मिक अवसरों पर इसका पूजन किया जाता है। इसलिये भवन में दहलीज का निर्माण भी अवश्य करायें।

6. भवन में प्रवेश द्वार के सामने खंभा, पिलर अथवा वृक्ष आदि के कारण बेध दोष उत्पन्न हो रहा हो तो ऐसे दोष का निवारण अवश्य करा ले जिससे भवन में रहने वालों की शारीरिक व आर्थिक स्थिति अच्छी रहे।

7. गृहस्वामी का शयनकक्ष नैऋत्य अर्थात दक्षिण पश्चिम कोण में होना चाहिये भवन में निष्प्रयोजन सामान रखने के लिये स्टोर रुम दक्षिण पश्चिम दिशा में बनाना चाहिये यह दिशा बजनदार भी बनानी चाहिये।

8. शयन कक्ष में पलंग दक्षिणी दीवार से सटाकर रखना श्रेयस्कर है। सोते समय सोने वाले का सिर दक्षिण दिशा में रहे। व्यक्ति के शरीर में मैगनेटिव पावर होती है सिर उत्तर में करने से चुंबक के नियमानुसार दो समान ध्रुवो के बीच आकर्षण होता है इससे शरीर के रक्त संचार में अवरोध के कारण मस्तिष्क को आवश्यक रक्त प्राप्त होने में कमी आती है जिससे ठीक से नींद न आने के कारण व्यक्ति तनाव का अनुभव करता है अतः स्वस्थ तन और मन दोनों के लिये आवश्यक है कि दक्षिण दिशा की ओर सिर करके शयन करें।

9. वास्तुशास्त्र में अग्नि का स्थान पूर्व दक्षिण दिशा में अर्थात आग्नेय कोण में होना बताया है आग्नेय कोण में रसोई बनाते समय रसोई में काम करने वाले का मुख पूर्व दिशा में होना चहिये।

10. भवन में तहखाने की आवश्यकता हो तो इसे उत्तर पूर्व दिशा में बनवाये तहखाना बनवाते समय यह ध्यान रखे कि वहाँ पर इस दिशा में सूर्य किरणें भी पहुँचें। पश्चिम दक्षिण दिशा में तहखाना वास्तु सम्मत नहीं माना जाता।

उपरोक्त वास्तु सूक्त वास्तुशास्त्र में निहित है जिनसे ज्ञात होता है कि भवन निर्माण के लिये भूमि चयन किस आकार का और किस दिशा में और किस स्थान पर किया जाये जिससे व्यक्ति का जीवन शुभ भूखंड पर बने भवन में सब प्रकार के धन धान्य देने के अतिरिक्त संतोष रुपी धन के साथ–साथ फले फूलें। यदि व्यक्ति वास्तु नियमों पर विशेष ध्यान दे तो वह भवन उसे पूर्ण रुप से सुखानंद की अनुभूति प्रदान करता है। ❋ ❋ ❋

चर्मरोग के लिये वरदान होम्योपैथी

Dr. Hemendra Vikram Singh
Skin Child & Chronic Disease Specialist
B.H.M.S (Gold Med.), H.M.D (London), M.B.A.H.(Switzerland)
Ph. 9557766882

आजकल प्रत्येक किसी न किसी रुप को चर्म रोग की समस्या से जूझ रहा है जिसमें सफेद दाग की समस्या पिछले दो दशको में तेजी से बढ़ी है। सफेद दाग के बारे में समाज में फैली हुई भ्रान्तियॉ इसे और भी जटिल बनाती है। यह तथ्य जानना आवश्यक है कि केवल 5 प्रतिशत सफेद दाग ही शरीर के लिये नुकसानदायक होते है जिन्हें हम ल्यूको डर्मा कहते हैं। 95 प्रतिशत सफेद दाग त्वचा के गिलेमिन पिगमेंट में गड़बडी से होते हैं जिसे विटिलिगो कहा जाता है यह शरीर को तो नुकसान नहीं पहुँचाते किन्तु त्वचा के सफेद पड़ जाने से व्यक्ति शाटिटिक कुरुपता का अनुभव करता है जिसके फलस्वरुप मानसिक पीड़ा भी रहती है।

होम्योपैथिक दवाओं द्वारा दोनों प्रकार के सफेद दागों का सफलतापूर्वक सम्पूर्ण निदान किया जाता है। सोराइसिस नामक चर्म रोग को समाज में एक अभिशाप एवं लाइलाज रोग का दर्जा प्राप्त है। यह रोग अधिकांशता आनुवांशिक होता है एवं किसी भी उम्र के लोगों में इसके लक्षण प्रकट हो सकते हैं। यह अधिकाँशता शरीर के उन भागों में होता है जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता। बच्चों में सोराइसिस की समस्या और अधिक पीड़ा दायक होती है जिसके कारण उनका स्कूल जाना भी बाधित होता है। होम्योपैथिक दवाओं से अतिशीर्घ एवं सफलतापूर्वक इस रोग का सम्पूर्ण निदान किया जाता है एवं एक वार रोग सही होने पर इसके आगे आने वाली पीड़ियों में होने की सम्भावना भी लगभग नगण्य होती है।

यह गलत धारणा है कि होम्योपैथिक दवाओं के सेवन के साथ बहुत तरीके के परहेज की आवश्यकता होती है। होम्योपैथिक दवा के साथ किसी भी प्रकार के परहेज जैसे लहसुन, प्याज, खट्टी चीजें, हींग इत्यादि परहेज की कोई आवश्यकता नहीं होती है एवं दवायें शीघ्र प्रभावी रुप से कार्य करती हैं। ❋ ❋ ❋

जब करें महादशाऐं अत्याचार तब करें उनका उपचार

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी ग्रह की महादशा चल रही होती है। कुछ लाभदायक तो कुछ कष्टदायक। किंतु सब का कामोबेश अच्छा–बुरा प्रभाव होता अवश्य है। ग्रह अगर उच्च का है और अच्छे स्थान में हैं तो बुरा भी लाभ देता है, किंतु यदि नीच का है और बुरे स्थान में है तो अच्छा और सौम्य ग्रह भी कष्ट देता है। तो कौन से ग्रह की महादशा में कौन से उपाय करने चाहिएं, उसी पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास हैः–

शनि महादशाः– बांसुरी में श्क्कर भर कर एकांत में दबाएँ। माथे पर दूध दही का तिलक लगाएँ। बन्दरों को गुड़ चना डालें। चांदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें। रोटी पर सरसों का तेल लगा कर कुत्ते व गाय को दें। शनि मन्दिर में चार अखरोट चढ़ाएँ उसमें से दो वापस लाकर सफेद कपड़े में बाँध कर घर में रखें। काले घोड़े की नाल का छल्ला बाँयें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें। हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें शनिवार को हनुमान मंदिर में तेल का दिया जलाएँ। पीपल में काले तिल के साथ शनिवार को दूध सींचे। काला वस्त्र व कम्बल डाकोत को दान करें।

राहु महादशाः– बहते पानी में ताँबे के 43 टुकड़े प्रवाहित करें। बहते पानी में तम्बाकू प्रवाहित करें। बहते पानी में शीशा व नारियल प्रवाहित करें। रात को जौ सिरहाने रख कर सोएँ प्रातः काल उन्हें पक्षियों का डाल दें। गोमेद का दान करें व सवा 3 रत्ती को गोमेद चाँदी की अंगूठी में दाएँ हाथ की मध्यमा में धारण करें। सफेद वस्त्र धारण कर सरस्वती की पूजा करें। काले कुत्ते को मीठी रोटियाँ खिलाएँ। सरसों का तेल का दान करें।

केतु महादशाः– नौ वर्ष से कम उम्र की कन्या को भोजन करवा कर दक्षिणा दें। लकड़ी के चार टुकड़े चार दिन तक बहते पानी में छोड़ें। चितकबरे कम्बलों का दान करें। थाली में बची हुई रोटी कुत्ते को डालें। लहसुनिया दान करें व सवा 6 रत्ती का लहसुनिया चांदी की अंगूठी में दाएँ हाथ की मध्यमा में धारण करें। नित्य गणपति की आराधना कर उन्हें मोदक का भोग लगाएँ। गोदान करें। बहते जल में कोयले के 21 टुकडे प्रवाहित करें। मछलियों को जौ के आटे की गोलियाँ बना कर डालें।

सूर्य महादशाः– उगते सूर्य को लाल चंदन का छींटा लगा कर सफेद फूल के साथ जल अर्घ्य दें। तांबे के बर्तन व गेहूँ का ब्राह्मणों को दान करें। आदित्य ह्रदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें। अपने पास सदैव तांबे का सिक्का रखें। नित्य गाय को गुड खिलाएँ। काम पर जाने से पूर्व एक डली गुड़ खा कर पानी पीकर ही प्रस्थान करें। सवा 5 रत्ती का माणिक तांबे की अंगूठी में दाएँ हाथ की अनामिका में धारण करें।

चन्द्र महादशाः– नित्य शिव आराधना करें। शिवजी को दूध से अभिषेक करें। खीर बना कर कन्याओं को खिलाएँ। भोजन में नित्य दही का प्रयोग करें। चावल, मोती व चांदी का दान करें। सवा 6 रत्ती का मोती चांदी की अंगूठी में दाएँ हाथ की कनिष्ठिका में धारण करें। गले में चंद्र लॉकेट धारण करें। दूध में चावल भिगो कर प्रातःकाल गाय को खिलाएँ।

मंगल महादशाः– रुई के गद्दे पर शयन नहीं करें। मीठी पूरियाँ गाय को खिलाएँ व भिखारियों को दें। जौ के आटे को दूध में गूँथ कर गोलियाँ बना कर मछलियों को खिलाएँ। हनुमान जी को सात शनिवार सिन्दूर को चोला चढ़ाएँ व गुड़ चने का प्रसाद बाँटें। नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें। बन्दरों को गुड़ चना डालें। ब्राह्मण को लाल वस्त्र दान में दें। सवा 8 रत्ती का मूंगा तांबे अथवा सोने की अंगूठी में दाएँ हाथ की अनामिका में धारण करें।

बुध महादशाः– मूंग अथवा मूंग की हरी दाल का दान करें। माँ दुर्गा की आराधना करें व दुर्गा सप्तशती का नित्य पाठ करें। सीपियों को इकटठा कर उनकी पूजा करें। गाय की नित्य सेवा करें। उसे हरा चारा डालें। चांदी की पतर में छेद कर उसे पानी मे बहा दें। सवा 6 रत्ती क पन्ना/ओनेक्स सोने अथवा चाँदी की अंगूठी में दाएँ हाथ की मध्यमा में धारण करें।

बृहस्पति महादशाः– गुरुवार के दिन पीला वस्त्र धारण करें। पीला भोजन करें। पूर्णिमा को सत्य नारायण भगवान की कथा व्रत करें। केले की पूजा कर उसकी जड़ में घी का दीपक जलाएँ। पीला वस्त्र, सोना, गुड़ व केसर का दान करें। चन्दन का तिलक नित्य करें। सवा 9 रत्ती का सुनेला सोने की अंगूठी में दाएँ हाथ की तर्जनी में धारण करें। पीली गाय को भीगी हुई चने की दाल खिलाएँ। सात लड़कों को पीला वस्त्र दान करें।

शुक्र महादशाः– सदैव भोजन से पूर्व गौ ग्रास निकालने की आदत रखें। कृष्ण पक्ष की प्रथम रात्रि को भैरव की उपासना करें। मोती, दूध दही, खीर का दान करें। घर में मोगरे का पौधा लगाएँ। पूर्णिमा को उसकी पूजा करें। मोगरे के फूलों से सरस्वती की पूजा करें। गाय की सेवा करें। सवा 5 रत्ती का मोती अथवा सवा रत्ती का हीरा या सवा 5 रत्ती का जरकीन चांदी की अगूंठी में दाएँ हाथ की तर्जनी में धारण करें। चांदी का छल्ला दाएँ हाथ के अंगूठे में धारण करें।

इन उपायों से सभी जातक को ग्रह महादशा में कष्ट पा रहे हैं, उन्हें शान्ति प्राप्त होगी। ❋❋❋

वास्तु सम्मत ऑफिस

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोधा संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

वास्तु के दृष्टिकोण से एक अच्छे आफिस में बैठते हुए यह ध्यान रखना जरूरी हैं कि स्वामी की कुर्सी आफिस के दरवाजे के ठीक सामने ना हो। कमर के पीछे ठोस दीवार होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखे कि आफिस की कुर्सी पर बैठते समय आपका मुंह पूर्व या उत्तर दिशा में रहे। आपका टेलिफोन आपके सीधे हाथ की तरफ, दक्षिण या पूर्व दिशा में रहें तथा कम्प्यूटर भी आग्नेय कोण में (सीधे हाथ की तरफ) होना चाहिए ।

इसी प्रकार स्वागत कक्ष (रिसेप्शन) आग्नेय कोण मे होना चाहिए लेकिन स्वागतकर्ता (रिसेप्सनिश्ट) का मुंह उत्तर की ओर होना चाहिए जिससे गलतियां कम होगी। ऑफिस में मंदिर (पूजा स्थल) ईशान कोण में होना चाहिए परन्तु इस स्थान पर एक गमला अवश्य रखें जिससे ऑफिस की शोभा बढ़ेगी। फॉईल या किताबों की रेक वायव्य या पश्चिम में रखना हितकारी होगा। परन्तु पूरब की तरफ मुंह करके बैठते समय अपने उल्टे हाथ की तरफ ''कैश बॉक्स'' (धन रखने की जगह) बनाए इससे धनवृद्धि होगी। उत्तर दिशा में पानी का स्थान बनाए। पश्चिम दिशा में प्रमाण पत्र, शिल्ड व मेडल तथा अन्य प्राप्त पुरस्कार को सजा कर रखें। ऐसा करने से आपका आफिस निश्चित रूप से वास्तु संम्मत कहलाएगा व आपको शांति व संमृद्धि देने के साथ साथ आपकी उन्नति में भी सहायक होगा।

विभिन्न कार्यालयों हेतु शुभ रंग –

1. किसी डॉक्टर के क्लिनिक में स्वयं का चैम्बर सफेद या हल्के हरे रंग का होना चाहिए।

2. किसी वकील का सलाह कक्ष काला, सफेद अथवा नीले रंग का होना चाहिए।

3. किसी चार्टर्ड एकाउन्टेंट का चैम्बर सफेद एवं हल्के पीले रंग का हो सकता हैं।

4. किसी ऐजन्ट का कार्यालय गहरे हरे रंग का हो सकता हैं। जीवन को समृद्धशाली बनाने के लिए व्यवसाय की सफलता महत्वपूर्ण हैं इसके लिए कार्यालय को वास्तु सम्मत बनाने के साथ साथ विभिन्न रंगों का उपयोग लाभदायक सिद्ध हो सकता हैं। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

क्या है आपके नाम का महत्व

पं. देव स्वरूप शास्त्री
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तु शास्त्राचार्य
मो. 9219634387

एक प्रसिद्ध नाटककार विलियम शेकसपीयर ने एक जगह लिखा है– नाम से क्या रखा है जिसे हम गुलाब कहते है, उसे किसी दूसरे नाम से भी पुकारों तो भी वह उतना ही महक देगा। सुनने में यह बात शायद अच्छी लगे पर वास्तविकता कुछ और ही है।

एक बार भगवान विष्णु और देवाधिदेव महादेव को लेकर ऐसी ही कुछ चर्चा हो गई विद्वानों ने कहा

किं वाससा तत्र विचारणीयम् वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ स्वकन्यां, चर्माम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः

सुंदर वस्त्र एवं अलंकार पहनने से क्या होता है? असली चीज तो गुण है। अगर गुण व योग्यता प्रधान है तो व्यक्ति पूजा जाएगा, आदर को प्राप्त करेगा इसलिए योग्यता ही प्रधान है। प्रस्तुति व अलंकारो से सजना प्रधान नहीं।

कुछ विद्वानों का मत है ऐसा नहीं है योग्यता तो प्रधान है ही परन्तु प्रस्तुति वस्त्र एवं अलंकरण का भी बड़ा महत्व है।

जिसके कारण कई बार महान गुण और योग्यता भी परास्त हो जाती हैं, यही कारण है कि समुद्र ने सुंदर आकृति अलंकारो से सुसज्जित एवं पीताम्बर के देखकर भगवान विष्णु को अपनी कन्या (लक्ष्मी) दे दी, परंतु चर्माम्बर भस्म व भभूत को देखकर देवाधिदेव महादेव को जहर (हलाहल विष) दे डाला जबकि देने वाला एक ही था। और लेने वाले वाले भी दोनों ही बराबरी के देव थे परंतु वस्त्र और अलंकारण से देने वाले की दृष्टि ही बदल गई।

नाम भी तो व्यक्ति का अलंकार है व्यक्ति की सबसे पहली प्रस्तुति है। हिंदू सनातन धर्म में नाम रखने की एक विशद योजना, एक प्राचीन परंपरा एवं एक विशिष्ट संस्कार (नामकरण संस्कार) यही संस्कार सिख संप्रदाय में है। जिसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहब के माध्यम से व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

नाम के पहले अक्षर के भीतर व्यक्ति का पूरा व्यक्तित्व छिपा होता है। व्यक्ति का नाम के प्रथम अक्षर से राशि निकाल कर फलादेश करना भारतीय ज्योतिष की पद्धति है। पहले विद्वानों ने भी नाम के अक्षर एवं उसके महत्व को समझा हैं उनके मतानुसार किसी भी अनजान व्यक्ति का चरित्र चित्रण नाम प्रथम अक्षर मालूम होने पर किया जा सकता है।

नाम रखने के सुझाव – जिस नाम को आप रख रहे हो, जहां तक हो सके उसे अपनी जाति वर्ग एवं गुण के अनुसार रखें। अशुद्ध बिगड़े हुए रुप एवं जाति से हटकर नाम न रखें, क्योंकि, इससे आपकी पहचान विकृत हो जाएगी।

अंक ज्योतिष द्वारा सही नाम का चयन – जहां तक हो सके आप अपना नाम अंक ज्योतिष द्वारा जो अंक आपके लिए शुभ हो उसी के अक्षरों के योग नामांक पर अपना नाम रखें आप अपने प्रतिष्ठान का भी नाम इसी प्रकार अंक ज्योतिष द्वारा सही नामांक वाला नाम चयन कर सकते हैं। ❋❋❋

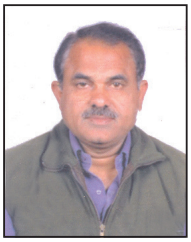

गोमूत्र से रोग-निवारण

डॉ. सतीश शर्मा
पशुधन प्रसार अधिकारी
पशुपालन विभाग उ. प्र.
मो. 9412254180

सनातन धर्म में गाय को माता के समान सम्मानजनक स्थान प्राप्त हैं। गाय सदैव कल्याणकारिणी तथा पुरुषार्थ चतुष्टयकी सिद्धि प्रदान करनेवाली है। मानवजातिकी समृद्धि गायकी समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। गोमाताका हमारे उत्तम स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। गाय आधिदैविक, आधिदैहिक एवं आधिभौतिक तीनों तापों का नाश करने में सक्षम है। इसी कारण अमृततुल्य दूध, दही घी, गोमूत्र, गोमय तथा गोरोचना–जैसी अमूल्य वस्तुएँ प्रदान करनेवाली गायको शास्त्रों में सर्वसुखप्रदा कहा गया है।

गोमूत्र

गोमूत्र मनुष्यजाति तथा वनस्पति–जगत् को प्राप्त होनेवाला दुर्लभ वरदान है। यह धर्मानुमोदित, प्राकृतिक, सहज प्राप्त, हानिरहित, कल्याणकारी एवं आरोग्यरक्षक रसायन है। स्वास्थ्य व्यक्ति स्वास्थ्यरक्षण तथा आतुर के विकार हेतु आयुर्वेदमें गोमूत्रको दिव्यौषधि माना गया है। आयुर्वेदाचार्योंके मतसे गोमूत्र कटु–तिक्त तथा कषाय–रसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, लघु, अग्नि दीपक, मेध के लिये हितकर, पित्तकारक तथा कफ और वात नाशक है। यह शूल, गुल्म, उदररोग, अफरा, खुजली, नेत्ररोग, मुखरोग, कष्ट, वात, आम, मूत्राशयके रोग, खाँसी श्वास, शोथ, कामला तथा पाण्डुरोग को नष्ट करने वाला होता है। सभी मूत्रों में गोमूत्र श्रेष्ठ है। आयुर्वेदमें जहाँ 'मूत्र' शब्द का उल्लेख है। वहाँ ही ग्राह्य है।

स्वर्ण, लौह आदि धातुओं तथा वतसनाभ, धत्तूर तथा कुचला–जैसे विषद्रव्यों को गोमूत्र से शुद्ध करने का विधान है। गोमूत्रद्वारा शुद्धीकरण होने पर द्रव्य दोषरहित होकर अधिक गुणशाली तथा शरीर के अनुकूल हो जाता है।

आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र में पोटोशियम, कैल्शियम, मैग्निशियम, क्लोराइड, यूरिया, फास्फेट, अमोनिया, क्रिएटिनिन आदि विभिन्न पोषक क्षार विद्यमान रहते हैं।

रोग–निवारण–हेतु विभिन्न विधियों द्वारा गोमूत्र का सेवन किया जाता हैं, जिनमें पान, करना, मालिश, पट्टी रखना, नस्य, एनिमा और गर्म सेक करना प्रमुख है। पीने–हेतु ताजा तथा मालिश–हेतु 2 से 7 दिन पुराना गोमूत्र उत्तम रहता है। बच्चों को 5–5 ग्राम तथा बड़ों को रोगनुसार 10 से 30 ग्राम तक की मात्रा में दिन में दो बार गोमूत्र का पान करना चाहिये। इसके सेवनकाल में मिर्च–मसाले, गरिष्ठ भोजन, तंबाकू तथा मादक पदार्थो का त्याग करना आवश्यक है। व्याधिविनाशार्थ गोमूत्र का प्रयोग निम्न रोगों में विशेष उल्लेखनीय है–

(1) यकृत् के रोग– जिगर का बढ़ना, यकृत् की सूजन तथा तिल्ली के रोगों में गोमूत्र का सेवन अमोघ ओषधि है। पुनर्नवा के क्वाथ में समान भाग गोमूत्र मिलाकर पीने से यकृत् की शोथ तथा विकृतिका शमन होता है। इस अवस्था में गोमूत्र का सेक भी लाभप्रद है। गर्म गोमूत्र में कपड़ा भिगोकर प्रभावित स्थानपर सेंक करना चाहिये।

(2) विबंध– जीर्ण विबंध या कब्ज होने पर गोमूत्र का पान करना चाहिये। प्रातः सायं 3–3 ग्राम हरड़ के चूर्ण के साथ इसका सेवन करने से पुराना कब्ज नष्ट हो जाता है।

(3) बवासीर– अर्श अत्यंत कष्टदायक तथा कृच्छ्रसाध्य रोग है। गोमूत्र में कलमीशोरा 2–2 ग्राम मिलाकर पीने से बवासीर में बहुत लाभ होता है। गर्म गोमूत्र का स्थानीय सेक भी फायदा पहुँचाता है।

(4) जलोदर– पेट में पानी भर जाने पर गोमूत्र का सेवन हितकारी है। 50–50 ग्राम गोमूत्र में दो–दो ग्राम यवक्षार मिलाकर पीते रहने से कुछ सप्ताहों में पेटका पानी कम हो जाता है। जलोदर के रोगी को गोदुग्ध का ही पान करवाना चाहिये।

(5) उदावर्त– उदर में वायु अधिक बनने से यह विकार उत्पन्न होता है। प्रातःकाल आधा कप गोमूत्र में काला नमक तथा नीबू का रस मिलाकर पीने से गैसरोग से कुछ दिनों में ही छुटकारा मिल जाता है। इस व्याधि में गोमूत्र को पकाकर प्राप्त किया गया क्षार भी गुणकारी है। भोजन के प्रथम ग्रास में आधा चम्मच गोमूत्र–क्षार तथा एक चम्मच गोघृत को मिलाकर भक्षण करने से वायु नहीं बनती।

(6) मोटापा– यह शरीर के लिये अति कष्टदायक तथा बहुत से रोगों को आमन्त्रित करने वाला विकार है। स्थूलता से मुक्ति पाने–हेतु आधा गिलास ताजा पानी में चार चम्मच गोमूत्र, दो चम्मच शहद तथा एक चम्मच नीबू का रस मिलाकर नित्य पीना चाहिये। इससे शरीर की अतिरिक्ति चर्बी समाप्त होकर देह–सौन्दर्य बना रहता है।

(7) चर्मरोग– खाज, खुजली, कुष्ठ आदि विभिन्न चर्मरोगों के निवारण हेतु गोमूत्र रामबाण ओषधि है। नीमगिलोय के क्वाथ के साथ दोनों समय गोमूत्र का सेवन करने से रक्तदोष–जन्य चर्मरोग नष्ट होते हैं। जीरे को महीन पीसकर गोमूत्र से संयुक्त कर लेप करने या गोमूत्र की मालिश करने से चमड़ी सुवर्ण तथा रोगरहित हो जाती है।

(8) पुराना जुकाम– विजातीय तत्वों के प्रति असहिष्णुता से बार–बार जुकाम होता रहता है। नासरन्ध्रों में सूजन स्थायी हो जाने से पीनस बन जाता है। इस अवस्था में गोमूत्र का मुख द्वारा सेवन तथा नस्य लेने से रोगमुक्ति हो जाती है। फूली हुई फिटकरी का चौथाई चम्मच चूर्ण आधा कप गोमूत्र में मिलाकर पीने से जुकाम ठीक हो जाता है। यह प्रयोग श्वास रोग को भी नष्ट करने में समर्थ है।

(9) शोथ– शरीर की धातुपात–क्रिया में विषमता होने से शोथ उत्पन्न होता ह। पुनर्नवाष्टक क्वाथके साथ गोमूत्र को सेवन शोथ को दूर करता है। इस रोग में घी तथा नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिये। शोथ पर गोमूत्र को मर्दन भी लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(10) संधिवात– जोड़ों का नया तथा पुराना दर्द बहुत कष्टकारक होत है। महारास्त्रादि क्वाथ के साथ गोमूत्र मिलाकर पीने से यह रोग नष्ट हो जाता है। सर्दियों में सोंठ के 1–1 ग्राम चूर्ण से भी इसका सेवन किया जा सकता है।

दर्द के स्थानपर गर्म गोमूत्र का सेक भी करना चाहिये।

(12) हृदयरोग– गोमूत्र में स्थित विभिन्न खनिज पदार्थ हृदय हेतु रसायन का कार्य करते हैं। इसके सेवन से रक्त का प्रवाह नियमित

शेष पेज 19 **पर**.....

ज्योतिष विद्या एक विज्ञान

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

आजकल ज्योतिष को लकर तरह–तरह के अन्दाज लगाये जाते है कि कोई कहता है कि ज्योतिष कौरा भ्रम है अन्धविश्वास है तो कोई कहता है कि ज्योतिष सम्पूर्ण विज्ञान है। परन्तु यह शत प्रतिशत सत्य है कि ज्योतिष का अस्तित्व निश्चित रुप से धरती पर धरती के हर प्राणी पर सभी जीव जन्तु पर यहां तक कि पूरे ब्रह्माण्ड पर हैं।

ज्योतिष बहुत पुराना विषय है। इसका अर्थ भी उतना ही कठिन और जटिल है। मनुष्य जाति कोई इतिहास की जितनी खोजबीन हो सकती है उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था जब ज्योतिष मौजूद नहीं रहा हो।

जीजस से पच्चीस जहार वर्ष पूर्व सुमेर में मिले हुए हड्डी के अवशेषों पर ज्योतिष के चिन्ह अंकित थे। पश्चिम में पुरानी से पुरानी जो खोजबीन हुई है। वह जीजस से पच्चीस हजार वर्ष पूर्व सुमेर सम्यता की है लेकिन भारत में तो बात और भी पुरानी है।

ऋग्वेद में सैंकड़ो हजारों वर्ष पूर्व ग्रह नक्षत्रों की जैसी स्थिति भी उसका उल्लेख किया गया है। इसी आधार पर लोक मान्य तिलक ने बताया है कि वेद इतने पुराने तो है ही क्योंकि इस समय जो नक्षत्रों की स्थिति भी उसे बाद में जानने का कोई उपाय नहीं था। लेकिन अब जरुर हमारे पास ऐसे वैज्ञानिक साधन उपलब्ध हो सके है। जिससे हम जान सके कि अतीत में नक्षत्रों की स्थिति कब कैसी रही होगी।

ज्योतिष की सर्वाधिक गहरी मान्यताएं भारत में पैदा हुई यह तो सच है कि ज्योतिष के कारण ही गणित का जन्म हुआ। क्योंकि ज्योतिष में गणना करनी होती है। अंक गणित के जो नौ अंक है उनकी उत्पत्ति भारत में हुई है। और धीरे–धीरे ये सारे जगत में फैल गये और हर भाषा में स्वीकृत किये गये।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सूर्य, चंद्र आदि ग्रह अपना प्रभाव डालते है। और यह प्रभाव सभी जीव जन्तु प्राणी आदि पर पड़ता है। यदि ज्योतिष शास्त्र का सही आंकलन किया जाये तो हम भविष्य में होने वाली किसी भी घटना के बारे में जान सकते है। ज्योतिष की सहायता से बच्चे के पैदा होते ही यह निर्णय लिया जा सकता है। कि अमुख बच्चा किस क्षेत्र में जायेगा और कैसा प्रदर्शन करेगा। इस प्रकार आप समझ सकते है कि ज्योतिष अपने आप में सम्पूर्ण शास्त्र है यदि व्यक्ति इसका उचित उपयोग करे तो वह आधुनिक विज्ञान को और भी अधिक आगे बढ़ा सकता है। सत्य है ज्योतिषशास्त्र सम्पूर्ण विज्ञान है।

व्यक्ति की सही जन्म कुंडली उसके चरित्र, स्वभाव को प्रदर्शित करती है या उसके भविष्य में होनी वाली प्रिय–अप्रिय घटना को भी बता देती है। जैसे मंगल और राहु के प्रभाव से अमुख व्यक्ति अपराधी बनेगा और यदि उसका उपाय किया जाये तो उसे अपराधी बनने से रोका जा सकता है। जैसे डाक्टर बीमारी का कारण जान कर उसका इलाज करके व्यक्ति को ठीक कर देते है। उसी प्रकार ग्रहों के खराब प्रभाव को भी कम किया या खत्म किया जा सकता है।

वैज्ञानिक भली–भाँति जानते है कि प्रत्येक भौतिक पदार्थ एक दूसरे को आकर्षित करता है। शायद इस लिए समुद्र में ज्वार आता है। जिसका कारण वैज्ञानिक चन्द्रमा बताते है। क्योंकि चंद्रमा पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है। शायद वैज्ञानिको को यह पता नही कि चंद्रमा ही कुण्डली पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है। क्योंकि चंद्रमा से ही राशि बनती है। गोचर विंशोत्तरी आदि सभी का आंकलन चंद्रमा से ही किया जाता है।

ज्योतिष विज्ञान अवश्य है लेकिन कमी है सही–सही आंकलन करने की क्या वैज्ञानिको द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म परीक्षण करने के बाद भी कई राकेट प्रक्षेपण करने में असफल नहीं हो जाते या अनुभवी और योग्य डाक्टरों से इलाज करने के वावजूद भी कई बीमार व्यक्ति मर नहीं जाते। तो इसके लिए दोषी कौन है। विज्ञान या वैज्ञानिक डॉक्टर या डॉक्टरी।

इस प्रकार की असफलतओं पर वैज्ञानिको द्वारा विज्ञान को कोरी कल्पना क्यों नहीं कहा जाता। परन्तु यदि किसी ज्योतिषी द्वारा की गई भविष्य वाणी गलत होती है तो ज्योतिष को कोरी कल्पना क्यों कहाँ जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में दिव्य दृष्टि के बारे में लिखा है। महाभारत के युद्ध में संजय ने पूरे युद्ध का वर्णन महल में बैठकर धृतराष्ट्र को सुनाया। संजय जो धृतराष्ट्र को सुना रहा था युद्ध के मेदान में वैसा ही हो रहा था। क्या यह विज्ञान नहीं। प्राचीन समय में तीरो व वाणों से ही वैसा विध्वंस होता होगा। जैसा आज वमों या मिसाइलों से होता है। अन्तर सिर्फ इतना है। कि बम और मिसाइल रासायनिक तत्वों से बनते है। और वाणों व तीारें में मंत्रों की शक्ति निहित होती थी।

उपरोक्त विवेचन को पढ़ने के बाद आप भी निश्चित रुप से सहमत हो गये होंगे कि ज्योतिष वास्तव में एक विज्ञान है।***

क्रोध हमें पतन की ओर धकेलता है

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

क्रोध में मनुष्य स्वयं के वश में नहीं रहता अपनी विवेक शक्ति खाकर विनाश की ओर अग्रसर रहता है। क्रोध का संबंध मन के अन्य विकारों से है। क्रोध में वशीभूत होकर हमें उचित अनुचित का विवेक नहीं रहता और हम हाथापाई कर बैठते है यदि तुरन्त क्रोध आकर खत्म हो जाये तो मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ठीक है पर बहुत दिनों तक टिका हुआ क्रोध एक ऐसी मानसिक बीमारी है, जिसका कुफल मनुष्य को दैनिक जीवन में भुगतना पडता है। वह अपने आपको सन्तुलित नही रख पाता। इससे उसके उत्तम गुण, भलाई, पुराने प्रेम उच्चतम संस्कार आदि सब खत्म हो जाते है। क्रोध का वे तो धीमा पड जाता है किन्तु दूसरे व्यक्ति को नुकसान या पीडित करने की भावना मन को बहुत दुख पहुँचाती है। क्रोध मन को एक उत्तेजित और खिंची हुई स्थिति में रख देता हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मन दूषित विकारों से मर जाता है।

क्रोध से प्रथम तो उद्वेग उत्पन्न होता हैं। रक्त में गर्मी आ जाती हैं। जिससे मनुष्य के शुभ भाव, प्रेम, सत्य, न्याय, विवेक, बुद्धि जल जाते हैं। मनुष्य पर अपनी राक्षसी माया चढा देता हैं। और मनुष्य शोक, दुख, चिन्ता, अविश्वास व्याकुलता आदि विकारो से वशीभूत होता रहता है। ये क्रोध मनुष्य का जीवन विषैला बनता है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति का शोषण करता है। अत्मिक उन्नति के लिए शान्ति, प्रसन्नता, प्रेम और सद्भावना चाहिए। जो व्यक्ति क्रोध के वश में है वह एक एसे दैत्य के वश में है जो न जाने कब मनुष्य को पतन के मार्ग पर ढकेल दे। यदि हमको संसार में सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत करना है तो सदैव उन मनोविकारों को नियत्रण में रखना आवश्यक है। यदि क्रोध न किया जाये तो अच्छा रहेगा पर यदि सच में आप क्रोध से छुटकारा पाना चाहते हैं तो अपनी आध्यात्म की शक्ति को जगाइए। अध्यात्म से हम अपने दिल व दिमाग को वश में कर सकते हैं। आध्यात्म की शक्ति को कैसे जागृत करना है? ये जानेगे अगले अंक में।

***

16 दिसम्बर - 15 जनवरी

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– मान–सम्मान, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, सरकारी कार्यो में आ रही अड़चनों दूर होगीं अचानक भाग्यानुकूल परिस्थितियाँ बढ़ेगी। अनावश्यक खर्चो में वृद्धि होगी। विदेश व्यापारिक यात्रा का योग है।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– वाहन इत्यादि सर्तकता से चलाऐं। चोट–चपेट की सम्भावना है। दूर–दराज की यात्राऐ सम्भावित है। अप्रत्याशित चिंताओं से मन अप्रसन्न रहेगा। आन्तरिक रोगों में वृद्धि होगी।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– व्यापार में अशातीत सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर आप भारी पड़ेगें। सर्तकता वाककुशलता से पूर्व अड़चने दूर होगी। जीवन–साथी से मनमुटाव सम्भव है।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– संतान प्राप्ति का योग है। व्यर्थ की दौड़–धूप से बचे। पूँजी निवेश सोच विचारकर करे। नौकरी पेशा व्यक्तियों का थोडे इतंजार के बाद सफलता मिलेगी। शत्रु को मुहँ की खानी पड़ेगी।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– नीच प्रवृत्ति वाले लोग आपके कामों में रूकावट डालेगें। धन–मान की हानि सम्भव है। रचनात्मक कार्यो में रूचि बढ़ेगी। मिथ्याभाषण व छल–कपट से दूर रहें।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– स्वास्थ्य पर रोज ध्यान दे, जरा सी लापरवाही आपको महँगी पड़ेगी। व्यापार में आई परेशानी दूर होगी। तकनीकी कार्यो की ओर झुकाव रहेगा। व्यापार में परिवर्तन का योग है। व्यावसायिक यात्राऐं होती रहेगी।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– राजनैतिक गतिविधियों में आपकी संलग्नता बढ़ेगी। इष्ट–मिष्ट में आपका रूतबा बढ़ेगा। छिपे हुऐ शत्रुओं से सावधान रहें। अकारण दौड़–धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– कठोर वाणी से बचे, स्वच्छ छवि व निर्मल व्यक्तित्व के दर्शन होगें। आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नित के अवसर प्राप्त होगें। मिथ्या भाषाण से बचे।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– सुख सुविधाओं में खर्चे बढ़ेगें। सोच–विचार कर निर्णय ले भविष्य में आपके सहायक होगें। सामाजिक प्रशंसा मिलेगी। आपके व्यक्तित्व के कई रूप देखने की मिलेगें।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– महिलावर्ग को अपेक्षित लाभ की प्राप्ति होगी। विरोधियों से सावधान रहें। खर्चीली प्रवृत्ति आपको आर्थिक व सामाजिक रूप से कमजोर करेगी। नेत्र पीड़ा, अनिद्रा की शिकायत रहेगी।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– महिलावर्ग को अपेक्षित लाभ की प्राप्ति होगी। विरोधियों से सावधान रहें। खर्चीली प्रवृत्ति आपको आर्थिक व सामाजिक रूप से कमजोर करेगी। नेत्र पीड़ा, अनिद्रा की शिकायत रहेगी।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– कपटी व्यक्तियों से सावधान रहे। कर्म क्षेत्र का विस्तार होगा। आय के स्त्रोत बढेगें। स्वास्थ्य पर धन दे, परिश्रम की अधिकता के कारण इसे नजरअंदाज न करें। संतान, पत्नी का यथेष्ट सुख प्राप्त होगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषशास्त्राचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

दिसम्बर	जनवरी
17 मोक्षदा एका. व्रत, गीता जं.	**1** स्वरूपी द्वादशी,नववर्ष प्रा.(अंगें.),
18 प्रदोष व्रत,	प्रदोष व्रत,
21 पूणि. व्रत, श्री दत्तात्रोय जं.	**4** अमावस्या
23 अन्नपूर्णा जयंती, किसान दि.	**8** श्री विनायक चतुर्थी
24 सौभाग्य सुन्दरी व्रत, श्री	**11** गुरु गोविन्द सिंह जं.,
गणेश चतुर्थी व्रत	श्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दि.
25 क्रिसमस डे, पं. मदनमोहन	**12** दुर्गाष्टमी
मालवीय जं.	**13** लोहड़ी,
28 कालाष्टमी व्रत	**14** मकर संक्रान्ति
31 सफला एकादशी व्रत	**15** भारतीय थल सेना दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं है।

गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
दिसम्बर– 16,17
जनवरी– 12,13

नामकरण संस्कार मुहूर्त
दिसम्बर – 16,17,23,24
जनवरी – 6,7

सर्वार्थ सिद्ध योग

दिसम्बर	जनवरी
16 ता. सू.उ. से 17 ता. 14–31	7 ता. सू.उ. से 7–23 तक
तक	11 ता. सू.उ. से 18–29 तक
20 ता. सू.उ. से 21 ता. सू.	13 ता. सू.उ. से 23–34 तक
उ. तक	
23 ता. सू.उ. से 24 ता. सू.	
उ. तक	

16 जनवरी - 15 फरवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास में महत्वपूर्ण कार्यों में सामान्य सफलता मिलेगी। अधिकारियों से मन मुटाव हो जाने से कार्य बिगड़ैंगे। विशिष्ट व्यक्तियों का समागम मासान्त में होगा जिससे सब कार्य पूर्ण होंगे तथा दु:ख दूर होगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में सामान्य शुभ परिवर्तन के साथ पूंजी व्यवस्था में सफलता मिलेगी। नौकरी में शुभ प्रभाव मिलेंगे। भूमि क्रय-विक्रय का योग बनेगा। कर्त्तव्यनिष्ठ जीवन सार्थक होगा। मानसिक चिंतन-शीलता से शान्ति मिलेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में राजकीय कार्यों में कार्य सिद्धि के लिये परेशानी होगी। ऋण की चिंता आकस्मिक बढ़ेगी। शारीरिक पीड़ा बनी रह सकती है। सिद्धिदायक गतिविधियों में बाधा होगी। धन हानि से कष्ट का अनुभव होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में विभिन्न परिस्थितियों का सामना होगा। रोजगार के काम सफल होते रहेंगे। भूमि, वाहन का सुख मिलेगा। संगीत, साहित्य के रूचि की वृद्धि होगी। दानशीलता से प्रशंसा होगी। उदारता में अग्रणी बने रहना होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में सिर पीड़ा, ज्वर, रक्तचाप वृद्धि से परेशानी होगी। उदर विकार से स्वास्थ्य में बाधा उत्पन्न हो सकती है। सन्तान की चिंता से मन खिन्न सा रहेगा। नियत संयत बने रहने पर भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में पारिवारिक उपद्रव का योग बन रहा है। श्रम साध्य सफलता मिलेगी। थोड़ा लाभ होने के कारण मन में अशान्ति रहेगी। मासान्त में कुछ समस्यायें बढ़ेंगी। शारीरिक पीड़ा बनी रहेंगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में सम्मान, स्वाभिमान की रक्षा होगी। लाभ-हानि तथा व्यय बराबर का योग है। लापरवाही से काम बिगड़ने की सम्भावना है। स्वजनों से पीड़ा हो सकती है। मासान्त में अकस्मात् यात्रा करनी पड़ेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में सम्मान घातक दुष्प्रभाव टल जायेगा। मासान्त में कार्य की सफलता बनी रहेगी। अभीष्ट सिद्धि के लिए भारी प्रयास होगा। द्रव्योपार्जन विशेष रूप से होगा। व्यवसायिक विवाद भी चल सकता है।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास मन में उद्वेग स्वजनों से विवाद, गुस्से के योग हैं। रोजगार धंधे में शिथिलता बनी रहेगी। कानूनी अड़चनों से दिमाग खराब होगा। कार्य व्यस्तता बनी रहेगी। मन का सकंल्प पूरा होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में शारीरिक दुर्बलता बनी रहेगी। स्त्री-सन्तान को कष्ट हो सकता है। मानसिक परेशानी बनी रहेगी। लाभ से खर्च अधिक होगा। गुप्त शत्रु विशेष विरोध करेंगें। शिक्षा की स्थिति सामान्य रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में झगड़े-झझंट की पूर्ण सम्भावना है। मन अशांत तथा पारिवारिक क्लेश बना रह सकता है। विवाद से बचे रहना चाहिए। मासान्त के आखिरी सप्ताह में कुछ शान्ति मिलेगी। कार्य सफल होगें।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस मास में व्यय की स्थिति ठीक रहेगी। लोकापवाद का भय बना रहेगा। बाहरी यात्रा से विशेष लाभ होगा। सौम्य व्यवहार से व्यावसायिक स्थिति संभल जायेगी। धन लाभ होने से मन प्रसन्न रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषशास्त्राचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जनवरी	फरवरी
16 पुत्रदा एका.व्रत **17** प्रदोष व्रत, **23** संकट चौथ, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती, **26** स्वामी विवेकानन्द जं. तिथि, श्री रामानन्दाचार्य जं., भारतीय गणतंत्र दिवस, कालाष्टमी **28** लाला लाजपत राय जयंती **29** षटतिला एकादशी व्रत **30** महा.गांधी पु. **31** मास शिवरात्रि	**2** मौनी अमा. **4** श्री बल्लभ जं. **6** गौरी तृतीया, **7** तिल चतुर्थी, **8** बसंत पंचमी, सरस्वती जयंती **9** दारिद्रहरण षष्ठी, **10** आरोग्य सप्तमी, शिवाजी जयंती **11** भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, **12** श्री दीनबंधु इण्ड्रयूज जयंती **14** जया एकादशी व्रत, वेलेन्टाइन डे **15** भीष्म द्वादशी,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जनवरी–18, 20, 27, 30
फरवरी–14
गृह प्रवेश मुहूर्त
जनवरी–18, 20, 21, 22, 27, 28, 30, 31
फरवरी– 4, 8
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जनवरी–16,17,19, 20 फरवरी–6
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जनवरी–16, 19, 26
फरवरी– 3, 10, 13, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

जनवरी	फरवरी
17 ता. सू.उ. से 26–09	6 ता. 22–54 से सू.उ. तक
20 ता. सू.उ. से 23 ता. सू.उ. तक	10 ता. सू.उ. से 12 ता. सू.उ. तक
28 ता. 7–39 से सू.उ. तक	14 ता. सू.उ. से 12–30
30 ता. 8–22 से सू.उ. तक	

घर का भेदी

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

"घर का भेदी लंका ढाए–सब जानते हैं।"

एक बार की बात है कर्पूर द्वीप में पद्ककेलि नाम का एक सरोबर था। वहां हिरण्यगर्भ नाम का एक राजहंस निवास करता था। द्वीप के सभी जलचरों ने मिलकर हिरण्यगर्भ को अपना राजा बना लिया।

यदि संसार में प्रजापालक राजा न हो, तो प्रजा, समुद्र में कर्णधार से रहित नाव के समान डूब जाती है। वैसे भी तो राजा प्रजा की रक्षा करता है और प्रजा कर आदि अदा करके राजा को बढ़ाती है। उन्नति से बढ़कर प्रजा का रक्षण श्रेयष्कर है, क्योंकि रक्षा के बिना सब कुछ होना कुछ न होने के समान है।

हिरण्यगर्भ के राज्य में सभी आन्दपूर्वक रहते थे। एक दिन वह कमलों के सिंहासन पर सुख से बैठा था। उसके चारों तरफ उसका परिवार बैठा हुआ था। आपस में विनोद वार्तालाप चल रहा था कि इतने में दीर्घमुख नाम का एक बगुला कहीं से आया और हिरण्यगर्भ को प्रणाम करके बैठ गया।

उसे देखकर हिरण्यगर्भ बोला, "हे दीर्घमुख! तुम देश–विदेश घूम आये हो। कोई नया समाचार सुनाओ।"

"महाराज! एक आवश्यक बात बताने के लिए तुरन्त उपस्थित हुआ हूं, आप ध्यानपूर्वक सुनो–जम्बू द्वीप में एक विंध्य नाम का पर्वत है उस पर चित्रवर्ण नाम का एक मोर राज्य करता है। मैं भ्रमण करता हुआ उसी पर्वत पर दग्ध नाम के जंगल में पहुंच गया। मुझे वह स्थान बहुत रमणीय प्रतीत हुआ। मैं निश्चिन्त होकर वहां घूमने लगा। मुझे वहां इस तरह घूमते देखकर राजा चित्रवर्ण के अनुचर पक्षियों ने पूछा– "तुम कौन हो?"

मैंने कहा, "मैं कर्पूर द्वीप से चक्रवर्ती राजा हिरण्यगर्भ का सेवक हूं। देश–विदेश घूमने की अभिलाषा से यहां आया हूं।"

इतना सुनकर सभी पक्षियों ने मुझे घेरकर चारों तरफ से प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

एक ने पूछा, "आपके और हमारे देश में कौन–सा अधिक सुन्दर है और कौन–सा राजा अधिक अच्छा है?"

मैंने कहा, "ऐसा पूछना व्यर्थ है। हमारे और तुम्हारे देश में बहुत अन्तर है और कर्पूर द्वीप तो स्वर्ग की तरह है और राजहंस दूसरे इन्द्रतुल्य! आप सब इस मरुभूमि में रहकर क्या करते हैं? हमारे देश में चलो।"

इतना सुनकर सभी क्रोध में लाल–पीले हो गये। किसी ने ठीक ही कहा है, "सांपों को दूध पिलाना केवल विष को उत्पन्न करना है, मूर्खों को उपदेश देने पर भी उनका क्रोध ही बढ़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे सांप को दूध पिलाने से उसका विष बढ़ता है। वैसे ही मूर्ख को उपदेश देने से उनका क्रोध शान्त होने की अपेक्षा बढ़ता है। अतः बुद्धिमान को ही उपदेश देना चाहिए, मुर्ख को नहीं। एक बार पक्षियों ने बन्दरों को उपदेश दिया तो उनको अपने घर को ही छोड़कर जाना पड़ा।"

यह सुनकर हिरण्यर्भ बोला, "वो कैसे?"

"सुनिये महाराज! मैं कहानी सुनाता हूँ"–दीर्घमुख बगुला बोला।

उपदेश

"मूर्ख को नहीं, बुद्धिमान को ही उपदेश देना चाहिए।"

बहुत समय पहले की बात है मंदा नदी के किनारे पर एक बहुत बड़ा सेमर का पेड़ था उस पर बहुत–से पक्षी घोंसला बनाकर सुख से आनन्दपूर्वक निवास करते थे।

वर्षा ऋतु में एक दिन मूसलाधार पानी बरसने लगा। सब पक्षी अपने–अपने घोंसलों में ठण्ड के कारण छिप गए। बन्दर भी अपने–अपने झुण्ड बनाकर पेड़ के नीचे आकर बैठ गए। बारिस के साथ–साथ हवा भी जोर–जोर से चलने गली। पेड़ के नीचे बैठे बन्दर ठण्ड के कारण ठिठुरने लगे।

पेड़ के नीचे बैठे हुए बन्दरों को ठण्ड के कारण थर–थर कांपते हुए देखकर पक्षियों ने दया भाव प्रकट करते हुए कहा, "अरे भाई बन्दरों! सुनो तो, इस तरह ठण्ड से क्यों दुःखी हो। हमें ही देखों, हमारे पास तो सिर्फ चोंच है जिनके द्वारा हमने तिनके इकट्ठे करके घोंसले बनाए हैं। तुम सब लोगों के हाथ–पांव भी हैं फिर क्यों ठण्ड से ठिठूर रहे हो।"

बन्दर पक्षियों की बात सुनकर झुंझलाये और विचार बोले, घोसलों के अन्दर सुख से बैठे हो और हमें कष्ट से देखकर हमारा मजाक उड़ाते हो। बारिश बन्द हो जाने दो, हम तुम सबको देख लेंगे।"

कुछ समय बाद जब बारिश बन्द हो गई तो बन्दर पेड़ पर चढ़ गये और सभी पक्षियों के घोंसले तोड़कर तहस–नहस कर दिये। घोंसलों में पड़े अण्डे तोड़कर फेंक दिये। ऐसे में पक्षियों को किसी तरह घोंसले छोडकर अपनी जान बचाकर भागना पड़ा।

कहानी सुनाकर दीर्घमुख बगुला बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि मूर्ख को नहीं बुद्धिमान को उपदेश देना चाहिए।"

स्वामी दीर्घमुख की बात सुनकर बोला, "लेकिन इन पक्षियों ने तुम्हारे साथ क्या किया?"

उन पक्षियों ने क्रोध में आकर मुझसे कहा, "कितने इस राजहंस को राजा बनाया है?" मुझे उनकी बात सुनकर गुस्सा आ गया और मैंने भी झुंझलाकर कह दिया, "मुझसे तो पूछ रहे हो, लेकिन तुम्हारे मोर को किसने राजा बनाया है?"

"मेरी बात सुनते ही सब मुझे मारने के लिए तैयार हो गये। ऐसे में मैंने भी अपना पराक्रम दिखाया। जैसे साधारण रुप में नारी का आभूषण लज्जा है वैसे ही पराजय के अतिरिक्त पुरुष का आभूषण क्षमा है, रति काल में नारी की निर्लज्जता सुखकारी और सामने से अच्छा पराक्रम प्रशंसनीय है।" दीर्घमुख बोला।

राजहंस मुस्कारते हुए बोला, "जो अपनी और दुश्मन की निर्बलता और सबलता जानकर व्यवहार के अन्तर को नहीं करता उसके दुश्मन तिरस्कार ही करते हैं। विद्वान, दुश्मन का बलाबल जानकर ही व्यवहार करते हैं जो ऐसा नहीं करता है उसे मुह की खानी पड़ती है, तुमने सुना नहीं बाघ की खाल ओढ़ने वाला गधा नित्य खेत में चरा करता थ, पर एक दिन वाणी–दोष के कारण मारा गया।"

"वो किस प्रकार महाराज?" दीर्घमुख बोला राजहंस ने कहा–"सुनो. ....." शेष अगले क्रमांक में

❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

की ओर ध्यान दें। नौकरी पेशा व्यक्तियों के लिये समय अच्छा है। यात्रा करते समय सावधानी बरतें। नयी योजनाओं पर काम करेगें। घर–परिवार में वैचारिक मतभेद उजागर होगें।

मिथुन राशि- जनवरी– वर्ष का प्रारम्भ भ्रमण मनोरंजन में व्यतीत होगा परंतु स्वास्थ्य पर ध्यान दें। सोच विचारकर निर्णय लें। आलस्य प्रमाद से बचे रहें। धार्मिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। मिथ्यापवाद, अनावश्यक भ्रमण से बचें। अधीनस्थ अधिकारियों से विवाद की स्थिति पैदा होगी। **फरवरी**– महत्वपूर्ण कार्यो को न टालें। मनः स्थिति डाँवाडोल रहेगी। महिला वर्ग से सचेत रहें। वाद–विवाद व वाणी नियंत्रण रखे अन्यथा अपनी ही हानि होगी। खर्चे पर नियन्त्रण रखे कर्जा बढ़ता जाऐगा। सात्विक कर्म करते रहने से स्थितियाँ अनुकूल होगी। **मार्च**– सरकारी काम काज से सम्बन्धित कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ सकते है। उच्चाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। शत्रु मौके का फायदा उठाने के लिये तैयार है। महत्वपूर्ण लेन–देन व पूँजी निवेश सोच समझकर करें। विधार्थी वर्ग के लिये समय उचित है परीक्षा की तैयारी पूरे मनोयोग से करें। **अप्रेल**– विभिन्न तरीके के अनुबन्ध आपके पास आऐगें। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। भाग्य एवं कर्म मजबूत होगा। परीक्षा एवं प्रतियोगिताओं में सफलता मिलेगी। नौकरी में तरक्की व स्थानान्तरण का योग है। विधार्थी वर्ग अपने पढ़ाई पर ध्यान दे। **मई**– पूर्व किये गये सभी प्रयास सफल होगें। समय आपके पक्ष में है। रुके हुऐ कार्य पूर्ण होगें। नवीन योजनाओं व कार्य करने का उचित समय है। भाइयों में लेन–देन पर विवाद सम्भव है। संतान की सफलता से मन हर्षित होगा। **जून**– देश–विदेश की यात्राओं का योग है। स्थान परिवर्तन व विदेश प्रवास का अवसर मिलेगा। बुद्धि विवेक से उलझे हुऐ मसले खुलझेगें। सहकर्मियों से वाद–विवाद में न उलझे। परिवार के साथ भ्रमण–मनोरंजन में समय व्यतीत करेगें। **जुलाई**–मास का आरम्भ कुछ उलझनों को लेकर आऐगा निर्णय लेने में कठिनाई होगी। रुका हुआ पैसा धीरे–धीरे प्राप्त होगा। धार्मिक आयोजनों में हिस्सा लेगें। बच्चों की सफलता सें मन प्रसन्न रहेगा। **अगस्त**– आपके विरुद्ध हो रही साजिश के प्रयत्न सफल होगें। आप उनकी परवाह न करते हुए जोश उमंग से आगे बढ़ते जाऐगें। उच्च शिक्षा के योग है, सरकारी क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के लिये समय उपयुक्त है। अधीनस्थ कर्मचारी से वाद–विवाद सम्भव है। कठोर वाणी आपके पारिवारिक सम्बन्धों में दरार डाल सकती है। **सितम्बर**– मनोवांछित फल की प्राप्ति से मन प्रसन्न होगा। वाणी पर नियन्त्रण रखें। छोटे भाई–बहिन से टकराव की स्थिति पैदा होगी। माता–पिता के स्वास्थ्य से चिंतित रहेगें। अतिविशिष्ट निर्णय लेने से पहले बड़ों की राय लें। स्त्रियों की राय पर अमल न करें। व्यवसाय में अप्रत्याशित परिवर्तन आऐगें। **अक्टूबर**– बुद्धि विवेक से विपरीत परिस्थितियों में भी आपकी कार्यक्षमता दर्शनीय होगीं। संतान पर विशेष ध्यान देना जरुरी है। सरकारी अधिकारियों व सगे सम्बधियों से वेविवाद के झंझटो में न पड़े। आर्कषक ऑफर से बचें। मेहनत का उचित प्रतिफल न मिलने से परेशान रहेंगे। **नवम्बर**– शत्रु आपको हतोत्साहित करने का प्रयास करेगें। प्रयासरत रहने से भाग्य एवं कर्म का प्रतिफल प्राप्त होगा। दामपत्य जीवन में सुधार आऐगा। दूसरों के बहकावे में आकर अपनी निजी परेशानियों को बढा लेगें। कारोबारिक गतिविधियो की गति धीमी रहेगी। **दिसम्बर**– सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। चल अचल सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। नवीन व्यापार व प्रतिष्ठान के लिये प्रयासरत रहेगें। वाहन चलाते समय लापरवाही न वरतें। संतान को सही दिशानिर्देशन से प्रतिफल अच्छा मिलेगा। समाज में आपका वर्चस्व बढेगा।

***कर्क* राशि- जनवरी**– नये वर्ष का स्वागत बहुत ही उमंग व जोश से करेगें। ललित कलाओं एवं संगीत में रुचि बढ़ेगी। अच्छे भवन का सुख मिलेगा। किसी भी बात को लेकर मन में निराशा न लें। कुसगंति से बचे रहें। पति पत्नी में टकरार की स्थिति रहेगी। दूर–दराज की यात्राऐं शुभकारी रहेगी। **फरवरी**– आपसी सहमति से पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। संतान की तरफ से चिंताएं रहेगी। नौकरी में वेतन वृद्धि व प्रमोशन मिलने की सम्भावना है। नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश करने से पहले सोच विचार लें। पिता व बुजुर्गो के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेगें। **मार्च**– पैतृक सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। दान धर्म में रुचि बढ़ेगी। किसी प्रिय वस्तु के खोने से मन व्यथित होगा। सरकार द्वारा सम्मान व पदोन्नति के सुअवसर प्राप्त होगें। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। व्यापार सुचारु रुप से चलता रहेगा। **अप्रेल**– संतान की उच्च शिक्षा का योग है। किसी अच्छे पद का ऑफर आपके पास आ सकता है। पूर्व में किये गये सभी प्रयासों में सफलता मिलेगी। पुराने रोगों से छुटकारा मिलेगा। परिजनों की राय आपके हित में रहेगी। विरोधियों के षड़यन्त्र का शिकार हो सकते है। **मई**– सरकारी कामों में सफलता मिलेगी। राजनैतिक गतिविधयों में संलग्न होने पर आपको सफलता मिलेगी। अधीनस्थ अधिकारी व सहकर्मी आपके कामों से खुश होगें। शेयर सट्टे में धन लगाने से पहले सोच विचार कर लें। खान–पान में परहेज करें। **जून**– चल–अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। किसी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। खर्चो की अधिकता रहेगी। दुंविचारो व दुंव्यसनो से दूर रहें। नव निर्माण की योजनाऐ क्रियान्वित होगी। पुराने विवदों से मुक्ति मिलेगी। धन निवेश करने से पहले विचार कर लें। **जुलाई**– कार्य के सिलसिले में घर परिवार से दूर रहेगें। शत्रुओं के झुठे आरोपों व लांछन से सावधान रहें। यह आपकी समाज में छबि बिगाडने की कोशिश होगी। सत्याचरण से पुनः आपको प्रतिष्ठा मिलेगी। धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होगें। **अगस्त**– लाभ–खर्च का सामंजस्य बना रहेगा। जरुरी कार्य सम्पादित होगे परंतु अत्यधिक दौड़ धूप बनी रहेगी। विरोधाभास के वावजूद स्थितियाँ नियंत्रण में रहेगी। सरकारी कामकाजों में सफलता व लाभ मिलेगा। पिता से सम्बन्ध अच्छे बनेगें। सुख–सुविधा के साधन जुटाऐगें। **सितम्बर**– किसी विशेष कार्य के पूर्ण होने की सम्भावना है। छोटे भाई बहिन से विवाद उजागर होगें। पारिवारिक विवाद, अनावश्यक भाग दौड़ व तनाव रहेगा। सुख–सुविधाओं में कमी आऐगी। दैनिक कार्यो में लापरवाही न वरतें। खान–पान का विशेष ध्यान रखें। **अक्टूबर**– आलस्य त्यागकर अपने कैरियर पर ध्यान लगाऐं। स्वभाव में चिडचिडाहट, मानसिक अशांति, कठोर वाणी आपके बने बनाऐ कामों को बिगाड़ सकती है। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। क्योंकि आयोजनों में भाग लेने से मन शांत होगा। **नवम्बर**– अधिकारी वर्ग के लिये समय अनुकूल है। यात्रा में स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। लाभ–हानि का संयोग रहेगा। मर्यादा में रहरक कार्य करें। गर्भवती महिलाओं के लिये समय कष्टकारी है। किसी प्रिय वस्तु के खोने का समाचार मिलेगा। समय का सही सदुपयोग करें। **दिसम्बर**– किसी नये कार्य की शुरुआत करेगें। सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। व्यापार की स्थिति सुधरेगी व नये रास्ते खुलेंगे। प्रतियोगिता एवं परीक्षा में सफलता मिलेगी। सरकारी नौकरी में मिलने में आ रही रुकावटें दूर होगी। आपके विरोधी परास्त होगें।

सिंह राशि- जनवरी– वर्ष की शुरुआत में अनचाही परेशानियाँ आपके उत्साह में कमी लाऐगी। अनियंत्रित खान–पान से उदर विकार उत्पन्न होगें। पारिवारिक विवाद उजागर होगें। समय विपरीत होने के वावजूद भी आप मानसिक संतुलन बनाऐ रखेगें। साहस पराक्रम में

वृद्धि होगी। **फरवरी**– साप्ताहिक कामों में फेर बदल होगा। आगुन्तकों से कष्ट मिलेगा। सहकर्मी आपके विरोधी बनेगें, आपके पाटनर से आपके सम्बन्ध खराब होगें। अनेक छोटी–मोटी घटनाएं आपको विचलित कर देगी। वाणी पर संयम रखें और समय को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न करें। **मार्च**– छोटी–बड़ी परेशानियों से आप घिरे रहेगें। गूढ़ रहस्यों को जानने की उत्कंठा बढ़ेगी। घरेलू खर्चो के बढ़ने से आपकी वित्तीय व्यवस्था पर असर पड़ेगा। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपके हित में रहेगा। अचानक धन लाभ से मन प्रसन्न रहेगा। विदेश यात्रा के प्रयास सफल होगें। **अप्रेल**– इस मास में मिलेजुले फल प्राप्त होगें। परिवार के साथ बिताये अपने पल आपके लिये स्मरणीय रहेगें। घर में सुख सुविधाएं जुटाने की कोशिश सफल होगा, प्रसन्नता व उल्लास का वातावरण बना रहेगा। पुरानी बाधा को समाप्त करने का प्रयास करें। **मई**– नये कार्यो को शुरु करने का उचित समय है। घुमने सैर सपाटे के लिये समय आपके पक्ष में है। प्रेम प्रसंगो को नया रुप देने का वक्त आ गया है। भाग दौड़ में स्वास्थ्य को अनदेखा न करें। मिथ्या आचरण से परहेज करें। **जून**– लाभ–खर्च की समानता रहेगी। स्त्री वर्ग से लाभ मिलेगा व्यवसाय द्वारा अपेक्षित लाभ मिलेगा। फालतू के प्रपंच व कुतर्क में न पड़े। अनपेक्षित स्थान परिवर्तन व कार्य परिवर्तन का योग है। परिस्थितियों को स्वीकार करे अपनी मेहनत से सफलता प्राप्त करेगें। **जुलाई**– आपकी मेहनत का प्रतिफल प्राप्त होगा अपने पर भरोसा रखें। सामाजिक मान–प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। व्यावसायिक या पारिवारिक वजह से यात्राएं सम्भव होगी। निमार्णाधीन कार्य पूर्ण होगा। परीक्षा परिणाम आपके अनुकूल होगें। **अगस्त**– छोटे–बड़े बदलाव से अपने व्यापार को नये रुप में परिवर्तित करेगें। किसी भी अधिकारी व कर्मचारी से वेवजह न उलझें। वाणी पर सयंम रखें। भाइयों से टकरार की स्थिति पैदा हो सकती है। आत्मसम्मान व आत्मविश्वास की वृद्धि होगी। **सितम्बर**– मेहनत का प्रतिफल प्राप्त होगा। जीवन में नये बदलाव आपको नयी पहचाान देगें। किसी स्त्री के बहकावे में परिवार में कलह का वातावरण बनेगा। जमापूँजी किसी आवश्यक कार्य के लिये खर्च करनी पड़ेगी। खान–पान की अनियमिता से गैस, कब्ज की शिकायत रहेगी। **अक्टूबर**– घरेलू जरुरी कामकाज पर ध्यान देना आवश्यक है नहीं तो परिवार में कलह की स्थिति पैदा होगी। झूठे आरोप प्रत्यारोपण से मानसिक आघात लगेगा। संतान पक्ष पर विशेष ध्यान दें कुसंगति से दूर रखें। ऐकाएक काम का बोझ, अधिकारियों से नोंक झोंक जैसी घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। **नवम्बर**– भाग्य–कर्म के संयोग से अशातीत सफलता मिलेगी मित्रों व आगुन्तकों से दूरी बनाऐ रखें। सुख सुविधाओं में कमी आऐगी। स्त्री वर्ग के लिये समय उपयुक्त है परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। व्यापार व नौकरी यथावत चलते रहेगें। **दिसम्बर**– खरीद फरोख्त के व्यवसाय में लाभ मिलेगा। दूसरों के बहकावे में न आऐ नहीं तो नुकसान उठाऐगें। कोर्ट कचहरी के विवादों से दूर रहे। स्वजनों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपके व्यक्तित्व के सामने कोई भी नही ठहर सकता है।

कन्या राशि- जनवरी– नववर्ष का स्वागत आप पूरे जोश से करेगें। नवीन व्यवसाय परिवर्तन का योग है। पुराने रोग परेशान करेगें। बुद्धि विवेक व भाग्य के बल पर छोटे–बडे लाभ होते रहेगें। प्रशासनिक सेवा से जुड़े व्यक्तियों के लिये यह मास उपलब्धियों वाला होगा। पूर्व में चल रहे विरोध उजागर होगें। **फरवरी**– विधा–बुद्धि का लाभ मिलेगा। अनुसंधानात्मक कार्य सम्पन्न होगें। अत्यधिक खर्चे बढ़ने से आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी। सरकार व प्राइवेट नौकरी के लिये यदि आवेदन किया है तो शुभ समाचार प्राप्त होगा। बेकार की चिड़चिडाहट व क्रोध बने बनाये कामों में रुकावट पैदा करेगें। **मार्च**– स्वजनों के साथ व्यापार करने का निर्णय आपके पक्ष में नहीं रहेगा। गृहस्थ जीवन में तकरार होगी। कर्ज उतारने के लिये किसी वस्तु को गिरवी रखना पड़ सकता है। आलस्य का त्याग करे स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अच्छी नौकरी मिलने का समय है। यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी। **अप्रेल**–अधिकारियों की चापलूसी करने से कार्य पूर्ण होगें। स्त्री वर्ग से आपको लाभ हो सकता है। परिवारी आपके सहयोगी बनेगें। चुगलखोरो से सावधान रहें। बेकार के वाद विवाद से अपने को दूर रखें। व्यापार में नवीन परिवर्तन लाभकारी सिद्ध होगें। **मई**– रुका हुआ पैसा वापस मिलेगा। व्यापार में नये अनुबंध मिलेगें। विधार्थीयों की एकाग्रता में कमी आऐगी। आध यात्मिकता की तरफ रुझान बढ़ेगा। कारोबारी व्यसताएं बढ़ेगी जिसके कारण सहकर्मियों व परिवारीजनों से मतभेद बढ़ेगें। **जून**– दूर दराज की यात्राएं भाग्योदयकारी सिद्ध होगी। तीर्थाटन का लाभ मिलेगा। किसी को नुकसान पहुचाँने वाले कार्य न करें। अधिकारियों से वेवजह विवाद हो सकता है। सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी हास–परिहास, मनोरंजन भ्रमण में समय व्यतीत होगा। **जुलाई**– विदेशी अनुबंध स्वीकार करने से पहले बड़ो की राय लें। अनुसधानात्मक कार्य पूर्ण होगें। धन लाभ के विभिन्न अवसर मिलेगें। प्रेमप्रसंगों में सफलता मिलेगी। धार्मिक अनुष्ठान व आयोजनों में हिस्सा लेने के अवसर मिलेगें। कोई महत्वपूर्ण व आयोजनों में हिस्सा लेने के अवसर मिलेगें। कोई महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। **अगस्त**– काम बनते बिगड़ते रहेगें। धोखाधड़ी मिथ्या लांछन, परिजनों का विरोध इत्यादि बाते घटित होगी। मानसिक अशांति वैचारिक अस्थिरता के कारण काम में मन नहीं लगेगा। अनावश्यक खर्चे बढ़ेगें। मेहनत लगन के बल पर विजय आपकी होगी। **सितम्बर**– मेहनत का प्रतिफल मिलेगा। दूर–दराज की यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी। किसी प्रिय वस्तु के खोने का दुख होगा। पिता–पुत्र में तनाव बढ़ेगा। परिवारीजन आपके विरोध में रहेगें। स्त्री वर्ग के बहकावें में न आऐ। आलस्य प्रमाद से बचे रहें। **अक्टूॅबर**– मित्रों आगुन्तको के वहकावे में न आऐ। कुछ स्मरणीय घटनाएं होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आऐगीं आर्थिक लेन देन करते समय सोच विचार ले। कुछ प्रशासनिक कार्यवाही हो सकती है। प्रवास व सामाजिक धार्मिक क्रियाकलाप सम्पन्न होगें। **नवम्बर**– अशोभनीय भाषा का प्रयोग न करें वरना आप परही उल्टा पड़ेगा। अचानक धन लाभ की सम्भावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। नीचस्थ व्यक्ति आपके कामों में विघ्न डालेगें। व्यर्थ की भाग दौड़ करनी पड़ेगी। फिजूल खर्चो से बचें। **दिसम्बर**– दूसरों के लिये गढ्ढा न खोदें। अध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति होगी। पुराने अधुरे कार्य पूर्ण होगे। मनोरंजन हास–परिहास में समय बिताऐगे, सुख सुविधा का उपयोग करेगें। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। समय का सही उपयोग करें।

तुला राशि- जनवरी– आपके नववर्ष की शुरुआत उमंगो भरी होगी आपके द्वारा किये गये प्रयास सफल होगे। धन–मान, प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। यह वर्ष उपलब्धियों वाला रहेगा। धार्मिक आयोजनों मे बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेगें। आलस्य व क्रोध का त्याग करें। घर का वातावरण सोहाद्रपूर्ण व सुखमय रहेगा। **फरवरी**– मानसिक तनाव, अत्याधिक भाग दौड़, अनावश्यक खर्चो जैसी छोटी बड़ी बाते आपको परेशान करेगी। काफी परिश्रम के बाद कार्य सिद्धि होगी। वाहन चलाते समय सावधानी वरतें। सरकारी अड़चने दूर होगी। खेलकूद में रुचि बढ़ेगी। नयी योजनाएं लाभप्रद रहेगी। **मार्च**– उच्च शिक्षा का योग है। अनुसधानात्मक कार्यो में मन लगेगा। आपके शत्रु प्रबल होगे परंतु कर कुछ नही पाऐगें। प्राइवेट व सरकारी नौकरी आपका इंतजार कर रही है। अनेक असुविधाओं के वावजूद विजय आपकी होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। **अप्रेल**– व्यापार में नये

परिवर्तन लाने का समय है। किसी से बेमतलब दुश्मनी मोल न ले व किसी के बहकावे में न आऐ। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क आपके हित मे रहेगा अनचाहा डर आपको सताएगा, चिंता न करे धैर्य से काम ले। उन्नित के अवसर हाथ आएगें। **मई**– स्थान परिवर्तन व प्रमोशन का लाभ मिलेगा। आपकी महत्वाकांक्षा का फल मिलेगा, सम्मान व उपहार का लाभ मिलेगा। अनुभवी व्यक्तियों से सलाह लेना हितकर रहेगा। अधिकारियों की कृपा रहेगी। आलस्य का त्याग करे व कार्यो में लापरवाही नुकसानदेह साबित होगीं। **जून**– स्वास्थ्य में अचानक गिरावट आऐगी। खान–पान व यात्रा में सावधानी वरतें। ध ार्मिक ग्रंन्थों के पठन पाठन में रुचि बढ़ेगी। रहस्यपूर्ण घटनाऐ घटित होगी। भाग्य–कर्म की प्रबलता के कारण कार्यो में पूर्णता आऐगी। पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। **जुलाई**– व्यावसायिक उद्देश्य से की गई यात्राए भाग्योदयकारी व लाभकारी होगी। समाज में आपका रुतबा सम्मान बढेगा। संतान अपनी अपेक्षाओं पर नही उतारेगी। कुटुम्ब में तनाव की स्थिति रहेगी। लाभ के साथ–साथ व्यय भी लगे रहेगें। किसी को भी पैसा उधार न दे। **अगस्त**– उच्चाधिकारियों के साथ मेलजोल बढ़ेगा। परदेश में व्यापार बढ़ेगा। निमार्ण सम्बन्धी कार्य गति धीमी रहेगी। बेकार के वाद विवाद व प्रतिस्पर्धा से अपने को दूर रखें। बड़ों की सलाह से काम करना आपके हित में रहेगा। प्रशासनिक कार्यो में आरही बाधाए दूर होगी। **सितम्बर**– अनैतिक कार्यो से दूर रहे। आत्मविश्वास में कमी आपके लिये नुकसानदेह साबित हो सकती है। दामपत्य जीवन में अस्थिरता की स्थिति आऐगी। विद्या–वुद्धि का विकास होगा। परिवार में मांगलिक कार्यो में हिस्सा लेगें। अपने रोजगार वृद्धि के लिये किये गये प्रयास सफल होगें। **नवम्बर**– बड़े बुर्जगों से आर्थिक लाभ होगा। परिवार में अंशाति रहेगी। छोटे भाई बहिनों का सुख मिलेगा। किसी पर आँख मुद कर विश्वास न करे आलस्य का त्याग करे। सुख साधनों का उपयोग करे। मित्रों के साथ आनंद विनोद में समय व्यतीत होगा। **दिसम्बर**– मेहनत का प्रतिफल मिलेगा। कोई नयी उपलब्धि अर्जित करेगें। सुख वैभव की वृद्धि होगी। राजकीय कृपा प्राप्त होगी। धन लक्ष्मी की कृपा बनेगी। शैक्षणिक कार्य में प्रगति होगी। संतान से मन प्रसन्न होगा। सभी पुराने विवाद सुलझेगें।

वृश्चिक – **जनवरी**– अनैतिक काय्रे से दूर रहें। वर्ष का आरम्भ मौज–मस्ती से करेगें। कई अच्छे परिवर्तन आऐंगें। सोचे हुऐ कार्य पूर्ण होगें। बुजुर्गो का आर्शीवाद मिलेगा। स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। कानुनी विवाद जोर पकड़ेगें। वाणी पर सयंम बरतें। **फरवरी**– साहस–पराक्रम में वृद्धि होगी। मकान का सुख प्राप्त होगा। धार्मिक आध्यात्मिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। जीवन साथी के कार्यो से मन प्रसन्न होगा। गलत संगत से अपने को बनाऐं। आपके कैरियर को नई ऊँचाइया मिलेगी। आपके शत्रु आपके परिवार को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगें। **मार्च**– स्थान परिवर्तन का समय है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। भाग्य में आ रहे अवरोध दूर होगें। प्रतियोगिताओं में सफलता मलेगी। नवीन योजनाओं में निवेश करना हितकर रहेगा। साहित्य कला में रुचि बढ़ेगी। अशोभनीय भाषा का प्रयोग न करें। **अप्रेल**– उच्च अभिलाषाऐं आपके जीवन का नया मोड़ देगी। पुराने रोगों से छुटकारा मिलेगा। बुद्विजीविको के लिये नये अनुबंध मिलेगें। व्यापार में विस्तार दृष्टिगोचर होगा। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी वही धन धान्य व समृद्धि में वृद्धि होगी। प्रतियोगी सफल होंगे। **मई**– उच्च अधिकारियों से टकराव की स्थिति पैदा होगी। कर्ज व रोग परेशान करेगें। शत्रु आपको परेशान करने का कोई मौका नही छोड़ेगें। घर–गृहस्थी की चिंताऐं सताऐगी। अपनी मेहनत व लगन से सबको परास्त करके आगे बढ़ते जाऐगें। **जून**– व्यापारिक उलझने बढ़ेगी। लाभ के अवसर हाथ आते–आते रुक सकते है। गुप्त षड़यंत्रों से सावधान रहें। धार्मिक आयोजन में भागीदारी आपके मन का शांत करेगी। विद्यार्थीयों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। अच्छी नौकरी के अनुबंध प्राप्त होगें। **जुलाई**– मास का प्रारम्भ किसी अप्रिय घटना व दुर्घटना को ओर संकेत करता है। भाग दौड़ की अधिकता रहेगी। छोटी सी लापरवाही बड़ा नुकसान दे सकती है। विद्यार्थीयों के लिये यह समय उत्साहपूर्ण रहेगा। नये अनुबंध करने से पहले विचार लें। **अगस्त**– कार्य विस्तार की योजनाएं फलीभूत होगी। प्रशासनिक अधिकारी कार्य के बोझ से परेशान रहेगें। मानसिक अशांति व वैचाारिक अस्थिरता बनी रहेगी। नये अनुबंध स्वीकार करने से पहले विचार करलें। यात्राएं सुखद व लाभकारी रहेंगी। **सितम्बर**– आर्थिक एवं व्यवसायिक कार्यो में प्रगति अच्छी बनी रहेगी। महिलावर्ग के लिये इस समय कष्टदायी स्थिति रह सकती है। घर–परिवार में शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। प्रेम प्रसंगों से दूरी बनाऐ रखें। **अक्टूबर**– जरुरत से ज्यादा जमाखोरी नुकसानदेह हो सकती है। दुर्घटनाओं से सावधान रहें। कारोबारी व्यस्तता के चलते तनाव की स्थिति रहेगी। व्यवसायिक अनुबंध आऐगें। उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी। **नवम्बर**– सुख, सम्पन्नता में वृद्धि होगी। शुभ समाचार की प्राप्ति से मन हर्षित होगी। कर्मठता व निड़रता का गुण विकसित होगा। परिवार में मांगिलक कार्य सम्पन्न होगें। लेन–देन में सावधानी बरतें। मनोवाांछित कार्य की सिद्धी होगी। **दिसम्बर**– पदोन्नित, वेतन वृद्धि व इच्छित स्थानान्तरण की सूचनाएँ प्राप्त होगी। व्यवसायी सीजन का पूरा लाभ उठाएगें। साहित्य संगीत में रुचि बढ़ेगी। अशोभनीय व्यवहार आपके बने बनाऐं कार्य बिगाड़ सकता है।

धनु राशि- जनवरी– वर्ष का शुरुआत पार्टी, मस्ती इत्यादि से करेगें। खर्च की अधिकता रहेगी। भाग–दौड़ की अधिकता रहेगी परन्तु कार्य बनते रहेगें। उच्च अधिकारी वर्ग से टकराव की स्थिति रहेगी। फँसा हुआ धन प्राप्त होगा। व्यर्थ के झगड़े झमेलों से बचें। स्वार्थी होने से बचें। **फरवरी**– परिवारीजनों से वैर–विरोध बढ़ेगा। खान–पान पर नियन्त्रण रखें । कर्म क्षेत्र में प्रगति होगी। लाभ के नये अवसर प्राप्त होगें। पाटनर से अनबन रहेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी रहेगी। संतान से यथेष्ट सुख प्राप्त होगा। **मार्च**– साहस पराक्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा कार्य सिद्धि होगी। रास्ते में आ रही बाधाओं को आप ठोकर मार कर आगे बढ़ जाऐगें। भविष्य में बचत की योजना लाभकारी सिद्ध होगी। जिम्मेदारियाँ बढ़ने के कारण स्वास्थ्य की अनदेखी न करें। **अप्रेल**– कार्यप्रणाली में नवीन परिवर्तन होगें। स्मरणीय घटनाएं घटित होगी। बैंक बेलेंस में वृद्धि होगी। घर का वातावरण अनुकूल होगा। नवीन योजनाओं में आपकी भागीदारी लाभकारी रहेगी। सरकारी कामों से लाभ लेने का अच्छा समय है। बुजुर्गो की कृपा दृष्टि प्राप्त होगी। **मई**– सकारात्मक सोच आपके जीवन में नये परिवर्तन लाऐगी। नये–नये ऑफर आऐगें, समय का सदुपयोग करें। प्रम प्रसंगों में न उलझे। प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करनी चाहिये। भाई–बहिन से सोहाद्रपूर्ण प्रेम की भावना बनाऐ रखें। **जून**– सरकारी कामों में अडचनें आऐगी। कोर्ट कचहरी के मामलें और उलझ जाऐगें। ज्यादा तनाव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकता है। बेकार के प्रलोभनों से बचें। यात्रा करते समय सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग विषय चुनते समय सावधानी बरतें। **जुलाई**– दामपत्य जीवन में नोंक–झोक, तकरार की स्थिति आऐगी। अपने अहम् को हावी न होने दें। व्यापार में तरक्की होगी। यात्राएं लाभकारी सिद्ध होगी। झूठे लांछन व आरोपों से सावधान रहें। धैर्य व संयम से काम ले, मुश्किले हल होगी। **अगस्त**– अपना आत्मविश्वास बनाए रखें, उम्मीद को न दोड़े। धार्मिक अनुष्ठान व आयोजनों में भाग लेना हितकर होगा। अपनी छवि निखारने का

अच्छा मौका है। आलस्य, चिंता व लापरवाही त्यागने से सभी कार्य बनेंगे। **सितम्बर**– प्रमोशन व मनचाहा स्थानान्तरण में बाधाए उपस्थित होगी। कुसंगति व बुरी लत लगाऐं। अधीनस्थ अधिकारियों से तनाव रहेगा। किसी भी बड़े पूँजी निवेश करने से पहले से विचार करें। व्यापारिक गतिरोध उत्तपन्न होगें। **अक्टूबर**– लाभकारी परिवर्तन होगें। रचनात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। विरोधी परास्त होगें। आपके विरुद्ध गलत टिप्पणी से आपके मान सम्मान को ठेस पँहुचेगी। शैक्षणिक कार्यो में प्रगति आऐगी। **नवम्बर**– दूर–दराज की यात्राएं कष्टकारी रहेगी। व्यवहार में शीलीनता वरतें व अनैतिक आचरण न करें। मित्रों के सहयोग से काम बनेगें। धन लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होगें। सामाजिक संगठनों में आपकी भागीदारी रहेगी। **दिसम्बर**– उत्तम पद व मान सम्मान प्राप्त होगा। पारिवारिक माहौल शांतिपूर्ण व उल्लासमय रहेगा। जमापूँजी में वृद्धि होगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरुरी है। प्रतियोगिता–प्रतिस्पर्धा में विजय होगी।

मकर राशि- जनवरी– वर्ष का प्रारम्भ रोमांचकारी रहेगी। शुभाशुभ फलों की प्राप्ति होगी। शुभ समाचार से मन प्रसन्न होगा। हस्तगत कार्यो में रुचि बढ़ेगी। भाग्यवादी व आशावादी दृष्टिगोण अपनाऐगें। ज्ञात–अज्ञात कारणों से मन अंशात होगा। **फरवरी**– स्वास्थ्य में शिथिलता रहेगी। बेकार के अन्धविश्वासों से दूर रहें। लेन–देन में देरी से मानसिक तनाव रहेगा। योजनाओं को कार्य रुप देने के लिये परिवार में भी सलाह लें। अनावश्यक खर्चे से बचें। **मार्च**– कोई अच्छा मुनाफा मिलेगा, पुराने झगड़े–झंझटों से मुक्ति मिलेगी। निराशाजनक परिस्थितियों से बचें। निजी क्षेत्र से जुड़े जातको को अच्छे ऑफर आऐगें। प्रापर्टी का सुख मिलेगा। प्रेम प्रसंग व गलतफहमियों से दूर रहें। **अप्रेल**– बड़े लोगों का साथ मिलेगा, प्रयासरत रहने से समस्याओं का समाधान होता जाऐगा। धार्मिक क्रियाकलापों में सक्रियता बढ़ेगी। पुराने रोग परेशान करेगें। विद्यार्थी वर्ग निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। **मई**– सामाजिक रुतवा बढ़ेगा। किसी सरकारी कार्यवाही से आपको सचेत रहना पड़ेगा। अनावश्यक खर्चे परेशान करेगें। नकारात्मक सोच, अनावश्यक क्रोध आपको परेशानी में डाल देगें। भूमि, मकान का सुख प्राप्त होगा। **जून**– मानसिक संताप की स्थिति पैदा होगी। विद्यार्थीयों का पढ़ाई से ध्यान भटकेगा। किसी अशुभ समाचार से मानसिक शांति भंग होगी। कार्य क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास सफल होगें। खर्च की अधिकता रहेगी। सामाजिक व धार्मिक संगठनों में भागीदारी बढ़ेगी। **जुलाई**– अधिकारी वर्ग से विवाद सम्भव है। विरोध के बावजूद भी शत्रु परास्त होगें। दामपत्य सुख की वृद्धि होगी। प्रलोभनात्मक योजनाओं के बहकावे में न आऐं। पैसा फॅस सकता है। खान–पान में परहेज करें। बच्चों की उददण्डता से परेशान होगें। **अगस्त**–व्यापार में नये आऐगें। अनुसंधनात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। रहस्यात्मक पहलू उजागर होगें। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। निराशावादी दृष्टिकोण अपने पर हावी होने दे, प्रयासों में धीरे–धीरे सफलता मिलेगी। **सितम्बर**– स्त्री के बहकावे में न आऐ गृह–कलह की स्थिति पैदा होगी। रुके हुऐ काम धीरे–धीरे बनने प्रारम्भ हो जाऐगें। व्यर्थ के वाद विवाद व कुर्तक से बचें। अधीनस्थ अधिकारियों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। लापरवाही से बचें। **अक्टूबर**– कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। साहित्य कला में रुचि बढ़ेगी। नये प्रोजेक्ट पर काम करने का उचित समय है। झूठे–आरोप व गल्तफहमियों के कारण अधिकारियों से टकराव होगा। सकारात्मक नजरिया व मेहनत के बल पर सफलता अर्जित करेगें। **नवम्बर**– वाहन आदि चलाते समय सावधानी बरतें। प्रेम संबंधों में दरार आऐगी। विदेशों से अच्छे अनुबंध प्राप्त होगें। व्यवसायिक गतिविधियों में भाग–दौड़ अधिक बनी रहेगी। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी। घूमने–फिरने, मनोरंज के अवसर प्राप्त होगें। **दिसम्बर**– किसी झूठे आरोपों में फँस सकते है। आप थोडी सी समझदारी से गुप्त तरीके से काम निपटा लेगें। पदोन्नित के अवसर प्राप्त होगें। नये समझोते लाभकारी सिद्ध होगें। संतान से यथेष्ट सुख प्राप्त होगें।

कुम्भ राशि- जनवरी– वर्ष का आरम्भ मौज–मस्ती उल्लास पूर्ण रहेगा। नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त होगी। सरकारी कामों में आ रही रुकावटे दूर होगी। नकारात्मक सोच आपके कामों में अड़चने पैदा होगी। बेकार के बाद विवाद में परीवारीजनों में कलह की स्थिति बनेगी। **फरवरी**– सुख सुविधाओं का लाभ–प्राप्त होगा। अनुसंधानात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। भाग–दौड़ का यथेष्ट फल अवश्य प्राप्त होगा। साहस–पराक्रम की वृद्धि होगी। मनोरंजन–भ्रमण में खर्चे बढ़ेगें। बेकार के प्रलोभनों से बचें। **मार्च**– आलस्य का त्याग करे, समयानुसार कार्य पूर्ण होने पर प्रसन्नता होगी। अपने प्रयासों से आप दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करेगें। परिवार में धार्मिक आयोजन का लाभ मिलेगा। प्रयासरत रहने से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। **अप्रेल**– बड़े प्रोजेक्ट मिलने से प्रसन्नता होगी। धन प्राप्ति के प्रयास सफल होगें। जन सम्पर्क से लाभ होगा। सुख–सुविधाओं का उपयोग करेगें। वाणी में मधुरता बनाऐ रखें। खान–पान पर ध्यान दें। दैनिक अनियमितता से बचें। **मई**– कुटुम्बियों से वैचारिक मतभेद उजागर होगें। पदोन्निति अथवा स्थानान्तरण के सार्थक परिणाम आऐगें। अधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा अपने व्यापार को नई ऊचाँइया देगें। सामाजिक प्रतिष्ठा व मान–सम्मान में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी। **जून**– कोई रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। जोश व उत्साह बरकरार रहेगा। मित्रों से लाभ होगा। छोटे भाई–बहिन से सुख की प्राप्ति होगी। निर्णय लेते समय सोच–विचार लें। शत्रुओं से सावधान रहें। जीवन में अचानक परिवर्तन आऐगा। व्यर्थ की भाग–दौड़ परेशान करेगीं। **जुलाई**– अध्ययन–अध्यापन में रुचि बढ़ेगी। उच्च शिक्षा में किये गये प्रयास सफल होगें। शुभ सुचनाएं व समाचार की प्राप्ति से मन, हर्षित होगा। धार्मिक व सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यात्राओं में कठिनाई आऐगी। **अगस्त**– उच्चाधिकारियों से टकराव की स्थिति पैदा होगी। शत्रु परास्त होगें। स्त्रीयों से लाभ होगा। व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में आपका रुतवा बढ़ेगा। पूँजी निवेश के लिये समय उचित है। पारिवारिक सम्बन्धों में दृढ़ता आऐगी। **सितम्बर**– उत्तम भोजन–वस्त्र इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। व्यावसायिक दृष्टकोण से शुभता प्राप्त होगी। कला–अभिनय में रुचि बढ़ेगी। किसी जानी–अनजानी परेशानियों से रुबरु होना पड़ सकता है। कार्यो में शिथिलता आऐगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। **अक्टूबर**– आत्मविश्वास आत्मसम्मान मे की आऐगी। एकाग्रता में कमी आऐगी। पिता से वैर विरोध व कैटुम्बिक परेशानियाँ सामने आऐगी। अनावश्यक शौक पर प्रतिबन्ध लगाऐं। धर्म–अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। **नवम्बर**– लम्बी यात्रा लाभकारी सिद्ध होगी। चुगलखोरो से सावधान रहें। किसी के बहकावें में न आऐं। माता–पिता के स्वास्थ्य में कमी आऐगी। भाग्योदयकारी परिवर्तन आऐगें। आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी। कुसगंति से दुर रहें। **दिसम्बर**– सरकारी कामों में उलझने बढेगी। प्रयासों में सफलता मिलेगी। यात्रा करते समय सावधानी बरतें। मिलेजुले फल प्रतिपादित होगें। मनोरंजन, मौज मस्ती में समय बिताऐगें। उच्च पद की प्राप्ति होगी। जीवन–साथी व परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मीन राशि-जनवरी– वर्ष का आरम्भ प्रसन्नतापूर्ण होगा। किसी इच्छित वस्तु की प्राप्ति से मन खुश होगा। जीवनसाथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आयात–निर्यात व्यापार में वृद्धि होगी। झूठे लांछन व आरोपों से मन खिन्न रहेगा। प्रतिद्वंदी व विरोधी नुकसान

महीना	सूर्य	मंगल	बुध	वृहसपति	शुक्र	शनि	राहु
जनवरी	14 मकर	8 मकर	8 धनु, 31 मकर	मीन	1 वृश्चिक, 30 धनु	27 कन्या (व)	धनु
फरवरी	13 कुभ	15 कुंभ	18 कुभ	मीन	25 मकर	कन्या (व)	धनु
मार्च	15 मीन	25 मीन	6 मीन, 28 मेष 31 मेष (व)	मीन	22 कुभ	कन्या (व)	धनु
अप्रैल	14 मेष	मीन	2 मीन (व), 23 मीन (मा)	मीन	16 मीन	कन्या (व)	धनु
मई	15 वृष	3 मेष	11 मेष, 31 वृष	8 मेष	11 मेष	कन्या (व)	धनु
जून	15 मिथुन	13 वृष	14 मिथुन, 29 कर्क	मेष	4 वृष, 29 मिथुन	कन्या (मा)	6 वृश्चिक
जुलाई	17 कर्क	25 मिथुन	20 सिंह	मेष	23 कर्क	कन्या	वृश्चिक
अगस्त	17 सिंह	मिथुन	3 सिंह (व), 17 कर्क (व) 27 कर्क (मा)	मेष	17 सिंह	कन्या	वृश्चिक
सितम्बर	17 कन्या	9 कर्क	5 सिंह, 22 कन्या	मेष	10 कन्या	कन्या	वृश्चिक
अक्टूबर	17 तुला	30 सिंह	9 तुला, 29 वृश्चिक	मेष	4 तुला, 28 वृश्चिक	कन्या	वृश्चिक
नवम्बर	16 वृश्चिक	सिंह	14 वृश्चिक (व)	मेष	21 धनु	15 तुला	वृश्चिक
दिसम्बर	16 धनु	सिंह	14 वृश्चिक (मा)	मेष	16 मकर	तुला	वृश्चिक

पहुँचाने का प्रयास करेगें। **फरवरी**– व्यवसायिक या व्यक्तिगत यात्राएं होगी। रहस्यात्मक बातों से पर्दा उठेगा। किसी कार्य के पूर्ण होने की प्रसन्नता होगी। अनावश्यक खर्चे बढ़ेगें। कारोबार में नये समझोते करने पड़ेगे। लाभ के अवसर प्राप्त होगे। सकारात्मक दृष्टिकोण समस्याओं को कम करेगा। **मार्च**– व्यापार में उथल–पुथल होगी। अधिकारियो से मेलजोल बढ़ेगा। किसी के दबाब में आकर निर्णय न लें। बाद–विवाद से अपने आपको बचाऐं। बढ़ते हुऐ जनसर्म्पक का फायदा उठाऐ। कानुनी विवाद खडे हो सकते है। मौजमस्ती मनोरंजन में समय व्यतीत करेगें। **अप्रेल**– शत्रुओं से सावधान रहें। प्रतियोगिता मे सफलता मिलेगी। उच्चधिकारियों से सम्पर्क बढेगा। उच्च सम्मान की प्राप्ति होगी। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। नये अनुभव आपके लिये लाभकारी सिद्ध होगें। जोश क्रोध से काम न लें। **मई**– लापरवाही के कारण राजकीय जुर्माना भरना पड़ सकता ळै। कठोर परिश्रम से सफलता मिलेगी। पारिवारिक तनाव उजागर होगें। प्रभावशाली व्यक्तियों के सम्पर्क मे आऐगें। खान–पान का ध्यान रखें। वाणी पर संयम बरतें। **जून**– कारोबार में आशातीत लाभ मिलेगा। उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी। साहस पराक्रम की वृद्धि होगी। अपनी ऊर्जा का गलत उपयोग न करें। पुराने रोग परेशान करेगें। अत्यधिक दौड़–धूप से बचें। संतान से यथेष्ठ सुख प्राप्त होगा। **जुलाई**– फालतू के विवादों से बचें । बढ़ते हुए कर्ज से मन अंशात रहेगा। प्रशासनिक कार्यवाही भी हो सकती है। आवश्यक जिम्मेदारियाँ बढ़ेगी। आगुन्तको से कष्ट होगा। उदर विकार परेशान करेगें। कामों में शिथिलता आपको मुश्किलों मे डालेगीं। **अगस्त**– उच्च कल्पनाशक्ति का विकास होगा। अनावश्यक भाग दौड़ से स्वास्थ्य प्रभावित होगा। प्रयासरत रहने से समस्याओं का समाधान होगा। शत्रु अपनी चाल में नाकाम होगें। नौकरी रोजगार में तरक्की होगी। परीक्षा प्रतियोगिता के लिये किये गये प्रयास सफल होगें। **सितम्बर**– शिक्षा मे मन नही लगेगा। व्यापारिक खर्चो में बढोत्तरी होगी। पार्टनर से वाद विवाद सम्भव है। घूमने–फिरने के अवसर प्राप्त होगें। जीवन–साथी से तनाव बढ़ेगा। कार्यक्षमता में कमी आऐगी। धार्मिक प्रपंच में फसँने से अपने को बचाऐं। **अक्टूबर**– शत्रु परास्त होगें। व्यवसायिक प्रयास सफल होगें। सरकारी उलझने बढ़ेगी। व्यर्थ भ्रमण, प्रेम प्रसंगों में धन की वर्बादी करेगें। दूसरे की गल्तियों पर पर्दा डालने के लिये आप उसमें शामिल हो जाऐगें। सतकर्मो में रुचि बढ़ेगी। **नवम्बर**– विरोधी षडयंत्र में कामयाब होगें। पदोन्नित–स्थानान्तरण के प्रयास सफल होगें। कार्यशैली व व्यवहार में परिवर्तन सम्भव है। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य व संयम बरतें। रहस्यपूर्ण घटनाएं घटित होगी। लाभ–हानि का संयोग रहेगा। **दिसम्बर**– कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से वेवजह परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वाणी में मधुरता आऐगी व आध्यात्मिक प्रगति होगी। अध्ययन–अध्यापन में रुचि बढ़ेगी। परिवार में सामंजस्य बढ़ेगा। झुंझलाहट व चिड़चिडाहट से दूरे रहें।

❋❋❋

शेष पेज 10 **से आगे.....**

तथा पर्याप्त मात्रा में होता रहता है। गोमूत्र का नित्य सेवन हृदयाघात से शरीर की रक्षा करता है।

(13) कफ–वुद्धि– सीमा से अधिक बढ़े हुए कफ का नाश करने–हेतु गोमूत्र प्रभावशाली ओषधि है। इसका सेवन करने से विभिन्न कफ–विकार यथा– तन्द्रा, आलस्य, शरीरगौरव, मुखका मीठा प्रतीत होना, मुखस्त्राव, अजीर्ण तथा गले में कफ का लेप रहना आदि नष्ट होते हैं।

(14) नासूर– इसे नाडीव्रण भी कहते हैं। इस रोग की जड़ गहरी होती है तथा शल्यक्रिया करनी पड़ती है। गोमूत्र का सेवन इस व्याधि को समूल नष्ट करने की क्षमता रखता है। प्रातः सायं 4–4 चम्मच गोमूत्र के पीने तथा प्रभावित स्थल पर गोमूत्र की पट्टी रखने से एक–दो माह में रोग–मुक्ति हो जाती है।

(15) कोलस्टेरोल का बढ़ना– कोलस्टेरोल एक वसामय द्रव्य है, जिसकी रक्त में सामान्य से अधिक मात्रा होने पर विभिन्न विकारों की उत्पत्ति होती है। गोमूत्र का 2–2 चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से बढ़ा हुआ कोलस्टेरोल कम हो जाता है।

इस प्रकार गोमूत्र का सेवन बहुत–सी व्याधियों को प्रशमन करता है। स्वस्थ्य व्यक्ति का स्वास्थ्य–रक्षण करने तथा उसे रोगों से बचाने–हेतु भी इसका सेवन किया जाता है। राम–वनवास के समय भरत 14 वर्ष तक इसी कारण स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे, क्योंकि वे अन्न के साथ गोमूत्र का सेवन करते थे– **गोमूत्रयावंक श्रुत्वा भ्रातरं वल्कलाम्बरम्।।** ❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला	50/- से 250/-
रूद्राक्ष माला (मध्यम)	300/- से 450/-
रूद्राक्ष माला छोटे दाने	650/- से 800/-
रूद्राक्ष- स्फटिक माला	150/- से 500/-
स्फटिक माला छोटी	150/-से 350/-
स्फटिक माला बड़ी	250/- से 1100/-
लाल चंदन माला	60/- से 200/-
हल्दी की माला	100/- से 300/-
कमल गट्टे की माला	60/- से 150/-

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र	500/- से 3100/- प्र.नग
स्फटिक लक्ष्मी	600/- से 1500/- प्र.नग
स्फटिक गणेश	600/- से 1100/- प्र.नग
स्फटिक शिव लिंग	300/- से 5,000/- प्र.नग
स्फटिक बॉल बड़ा	400/- प्र.नग
स्फटिक बॉल छोटी	300/- प्र.नग

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट	3100/-
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)	1100/-
नवरत्न अंगूठी	200/- से 550/-
काले घोड़े की नाल असली	550/-
काले घोड़े की नाल का छल्ला	100/-
श्वेतार्क गणपति	250/-
इंद्रजाल	150/-
बृहमजाल	150/-
गोमती चक्र	20/- जोड़ा
नाभि चक्र	20/- जोड़ा

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)	3,000/-
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम	1100/-, 1500/-
गणेश शंख	350/- से 650/-
लक्ष्मी शंख	550/- से 1,100/-

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच	1100/-
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच	1100/-
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच	1100/-
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट	2100/-
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में	1100/-
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच	1100/-
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित	1100/-
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित	1100/-
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक	1100/-
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच	1100/-

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)	25,000/- प्र.नग
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)	1500/- प्र.नग
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष	1500/- प्र.नग
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष	3000/- प्र.नग
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष	1500/- प्र.नग
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष	200/- प्र.नग
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष	20/- प्र.नग
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष	200/- प्र.नग
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष	2,000/- प्र.नग

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग	300/- से 2500/- प्र.नग
पारद श्री यंत्र	600/- से 3100/- प्र.नग

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)	80/- प्र.नग
पिरामिड छोटे (पीतल)	120/- प्र.सेट
कार पिरामिड	150/- से 300/- प्र.सेट
स्टडी टेबल पिरामिड	400/- प्र.सेट

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल	150/-
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी	100/-
गऊ लोचन	200/-
एकाक्षी नारियल	500/- से 1,100/-

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट	50/-से 100/-
समृद्धि पेड़	70/-से 200/-
लाफिंग बुद्धा	80/-से 100/-
क्रिसटल बॉल	80/-
ग्लोब	60/-
पिरामिड शुभ-लाभ	40/-
लुक, फुक, साहू	170/-
लवबर्ड	70/- से 225/-
कछुआ	30/-से 50/-
तीन टांग का मेंढ़क	70/-

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262